بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 26
Issue - 04

राह-ए-ईमान

अप्रैल
2024 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत).....4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 29.3.2024).....8
7. मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु व जीवन की आस्था का महत्त्व.....12
8. इस्लाम के लिए एक अध्यात्मिक मुक़ाबले की आवश्यकता.....23
9. हुज़ूर अनवर से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर.....26
10. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

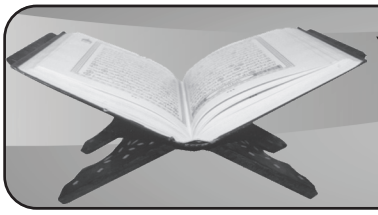

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

وَ السَّارِقُ وَ السَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْۤا اَیْدِیَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿۳۹﴾ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ
ظُلْمِهٖ وَ اَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ یَتُوْبُ عَلَیْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۴۰﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ یُعَذِّبُ
مَنْ یَّشَآءُ وَ یَغْفِرُ لِمَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۴۱﴾

अनुवाद:- 39-और जो पुरुष चोर हो और जो स्त्री चोर हो उन दोनों के हाथ उस दोष के कारण काट दो जो उन्होंने किया है। यह अल्लाह की ओर से दण्ड के रूप में है और अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है। 40-और जो व्यक्ति अत्याचार करने के बाद तौब: (पश्चाताप) कर ले और सुधार भी कर ले तो निश्चय ही अल्लाह उस पर कृपा करेगा। निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है। 41-क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह वह सत्ता है कि आसमानों और ज़मीन की हुकूमत उसी की है। वह जिसे चाहता है अज़ाब देता है और जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और अल्लाह प्रत्येक बात का जिसे वह करना चाहे उस के करने का पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है। (अल माइदा : 39-41)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत हफस बिन आसिम बताते हैं कि मैं अपने चाचा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के साथ मक्का के सफर में था। रास्ते में उन्होंने नमाज़-ए-ज़ुहर दो रकअत पढ़ाई इसके बाद वह अपने निवास स्थान पर आए और बैठ गए हम भी आपके साथ आकर बैठ गए। आपने उस तरफ देखा जिधर नमाज़ पढ़ाई थी। आपने देखा कि कुछ लोग अभी तक नमाज़ पढ़ रहे हैं। आपने पूछा ये लोग क्या कर रहे हैं? मैंने कहा सुन्नतें पढ़ रहे हैं। आपने फरमाया- अगर सुन्नतें पढ़नी थीं तो मैं पूरी नमाज़ पढ़ाता। ए भतीजे! मैं रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमम के साथ सफर करता रहा हूँ आप ने अपनी वफात तक सफर में दो रकअत फ़र्ज़ से अधिक नमाज़ नहीं पढ़ी। मैं अबू बकर के साथ सफर में रहा हूँ उन्होंने भी कभी दो रकअत फर्ज़ से अधिक नमाज़ नहीं पढ़ी, यहाँ तक कि वह फौत हो गए। मैं उमर के साथ भी सफर करता रहा हूँ आपने भी अपनी वफात तक कभी दो रकअत फर्ज़ से अधिक नमाज़ नहीं पढ़ी। फिर उसमान के साथ सफर पर रहा हूँ उन्होंने भी अपनी वफात तक इसी पर अमल किया। अल्लाह तआला का इरशाद है कि तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श (उसवा) में अच्छा नमूना है। (और यही सुन्नत है जिसका हर मुसलमान को पालन करना चाहिए)

(मुस्लिम किताबुस्सलात)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

विरोधियों के लिए चिंतन का विषय

विरोधियों के बहुत ही अश्लील लेखों पर आप ने फरमाया:

हमारे और उनके दिल अल्लाह तआला के हाथ में हैं। ख़ुदा ताला नीयतों को ख़ूब जानता है और उन कामों को जो हम कर रहे हैं देखता है। वह ख़ुद फ़ैसला कर देगा और सच्चाई पर अपनी मुहर लगा देगा। हमको तो ये ताज्जुब आता है कि अगर ये लोग तक़्वा और खौफ-ए-ख़ुदा से काम लेते तो ख़ौफ़ मुक़ाम से डर जाते और मुख़ालिफ़त में इतनी गाली-गलौज न करते। वे देखते कि क्या वह समय नहीं आया कि मसीह मौऊद नाज़िल हो? क्या सलीब (अर्थात ईसाइयत) का ग़लबा नहीं हुआ? क्या इस्लाम का अपमान और मज़ाक नहीं उड़ाया जाता? वे देखते कि सदी में से उन्नीस साल गुज़र गए और कोई मुद्दई खड़ा नहीं हुआ जो लाचार इस्लाम की हिमायत के लिए मैदान आता।

फिर ज़रूरत और वक़्त ही पर अपनी नज़र सीमित न रखते, अगर वे ग़ौर करते तो उन को मालूम होता कि आसमान ने साफ़ गवाही दे दी और कुसूफ़ ख़ुसूफ़ (चंद्र-सूर्य ग्रहण) ज़ाहिर हो गया जो कि महान निशान निर्धारित हो चुका था। ताईदी निशानों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ रही है वह उसे देखते और सिलसिला की तरक्की पर ग़ौर करते और सोचते कि क्या मुफ़्तरी (झूठे मुद्दई) इसी तरह तरक़्क़ी किया करते हैं।

इन सब बातों पर पूरी तरह से नज़र डालने के बाद तक़्वा का तक़ाज़ा तो ये था कि इतने खुले खुले सबूतों के होते हुए भी अगर उनकी निगाह अंधकार में थी तो ख़ामोश हो जाते और सब्र से इंतिज़ार करते कि अंजाम क्या होता है। मगर यहां तो मेरी मुख़ालिफ़त में बहुत शोर शराबा किया गया और गंदी गालियां दी गईं जिनकी मिसाल पहले मुख़ालिफ़ों में भी पाई नहीं जाती।

'हुजजुल किरामा' में नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान ने लिखा है कि निशानियाँ पूरी हो गई हैं और फिर अपनी औलाद को (आने वाले मसीह को) सलाम पहुंचाने की वसीयत करता है। मगर मैं कहता हूँ कि अगर वह ज़िंदा होते तो ख़ुद भी इन मुख़ालिफ़त करने वालों ही के साथ होते। ये लोग कब मानने वाले होते हैं जब तक वही नज़ारा आँखों से ना देख लें जो ख़्याली तौर पर दिल में सोच रखा है। ये लोग मेरी मुख़ालिफ़त में जो कुछ भी कर सकते हैं करें मुझे ज़रा भी परवाह नहीं क्योंकि यह मेरा मुक़ाबला नहीं यह तो ख़ुदा से मुक़ाबला किया जाता है। अगर मेरी अपनी मर्ज़ी पर होता तो मैं एकांतवास को बहुत पसंद करता था परंतु मैं क्या कर सकता था जब कि ख़ुदा तआला ने ही ऐसा पसंद किया। ये मुक़ाबला करें मगर देख लेंगे कि ख़ुदा के साथ कोई जंग नहीं कर सकता। वह एक पल में सालों की कार्रवाई को तहस नहस कर देता है। (मल्फ़ूज़ात जिल्द-3)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

...या यदि वे सच्चे हैं तो अल्लाह और उसके रसूल की कोई प्रमाणित व्याख्या (शरह) सामने लाएं। और तुम यह तो जानते हो कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 'तवफ्फी' का शब्द केवल इमातत (मृत्यु देना) के अर्थ में बोला है। आप समस्त इन्सानों में सब से गहरा ज्ञान रखने वाले तथा प्रथम श्रेणी के प्रतिभावान थे। क़ुर्आन में भी शब्द 'तवफ्फी' उन्हीं अर्थों में आया है। इसलिए तुम अल्लाह के वाक्यों में (अपने) घटिया विचार से अक्षरांतरण (तहरीफ़, अक्षरों में परिवर्तन) न करो और तुम उन चीज़ों के बारे में जीनके संबंध में तुम्हारी ज़बानें झूठ वर्णन करती हैं यह न कहो कि वह सच है और यह झूठ है। यदि तुम संयमी (मुत्तक़ी) हो तो अल्लाह से डरो।

तुम ग़लत और अटकलपिच्चु (आस्था) के पीछे क्यों लगे हुए हो और उसकी तफ्सीर को पसन्द नहीं करते, जो हर दोष से पवित्र और समस्त मासूमों का सरदार है (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अत: इस प्रकार के पक्षपात से बचो। हे मौत के कीड़ो! मौत को याद रखो (क्या तुम समझते हो कि) तुम्हें संसार में यों ही हर्षोल्लास में छोड़ दिया जाएगा। उस दिन को याद करो जब अल्लाह तुम्हें मृत्यु देगा। फिर तुम उसकी ओर एक-एक करके लौटाए जाओगे और कोई भी सच्चाई का विरोधी और दुश्मन तुम्हारी सहायता न कर सकेगा और तुम से अपराधियों की भांति पूछताछ की जाएगी।

रहा कुछ मूर्ख लोगों का यह कहना कि ईसा अलैहिस्सलाम के रूहानी जीवन के साथ नहीं बल्कि शारीरिक जीवन के साथ बुलंद आकाशों की ओर रफ़ा पर इज्मा (सर्वसम्मति)हो चुका है। इसलिए तू जान ले कि यह कथन केवल एक व्यर्थ बात तथा एक घटिया सौदा है जिसे केवल मूर्ख ही ख़रीद सकता है। इज्मा से अभिप्राय सहाबा का इज्मा है और वह इस आस्था के बारे में सिद्ध नहीं है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. ने 'मुतवफ्फीका' के अर्थ 'मुमीतुका' के किए हैं। अत: मृत्यु तो सिद्ध है चाहे तेरा भूत उसे स्वीकार न करे। हे वह व्यक्ति जिसने मुझे कष्ट दिया है! तुम ने यह सुना है कि आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي ठोस तर्क और स्पष्ट रूप से इस बात की ओर मार्ग-दर्शन करती है कि जो मृत्यु (वफ़ात) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. की तफ्सीर से सिद्ध होती है वह घटित हो चुकी और अपनी पूर्णता को पहुँच गई न यह कि वह घटित होने वाली है जैसा कि कुछ लोगों का विचार है। क्या तुम विचार करते हो कि ईसाईयों ने अपने रब्ब के साथ भागीदार नहीं ठहराया? और क्या वे कैदियों के समान उसके जाल में गिरफ्तार नहीं हैं? यदि तुम यह इक़रार करते हो कि वे गुमराह हो चुके हैं और दूसरों को भी उन्होंने गुमराह किया हुआ है तो फिर अनिवार्य तौर पर तुम्हें इसका भी इक़रार करना होगा कि मसीह की मृत्यु हो चुकी। क्योंकि उन (ईसाइयों) की गुमराही (पथ भ्रष्टता) मसीह की मृत्यु पर निर्भर थी। इसलिए विचार कर और निर्लज्ज लोगों की तरह व्यर्थ बहस न कर। और यह (मसीह की मृत्यु का) मामला क़ुर्आन और समस्त

मानवजगत के इमाम और नबी (हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीस से प्रमाणित है। इसलिए तुम्हें किसी ऐसी रिवायत पर कान नहीं धरने चाहिए जो इसके विरुद्ध हो। वास्तविकता तो खुलकर सामने आ चुकी। इसलिए तुम किसी ऐसे व्यक्ति की ओर ध्यान मत दो जो इनका विरोधी हो और न ही तुम इस के बाद किसी रिवायत और रावी (वर्णन करने वाला) की ओर ध्यान दो। उन दावों के कारण स्वयं को तबाह न कर। और विनम्र लोगों की भांति सोच-विचार कर। यह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा आदरणीय सहाबा रज़ि. की वह (आस्था) है जो हमने तुझे याद दिलाई है ताकि हम तुझ से सन्देह का पर्दा हटा दें। सहाबा के बाद आने वाले लोगों के इज्मा की वास्तविकता का जहाँ तक संबंध है तो उनकी कुछ बातों की चर्चा हम बाद में तुम से करेंगे। यद्यपि तुम इस से पहले लापरवाह मात्र थे।

जान लो कि इमाम बुख़ारी रह. जो अल्लाह की कृपा (फ़ज्ल) से मुहद्दिसों (हदीस विदों) के सरदार थे वह सर्वप्रथम मसीह की मृत्यु का इक़रार करने वाले थे। जैसा कि उन्होंने अपनी सही (बुख़ारी) में इसकी ओर संकेत किया है। उन्होंने इन दो आयतों (فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي - اِنِّیْ مُتَوَفِّیْکَ) को इस उद्देश्य से एकत्र किया था कि वे दोनों एक दूसरे को शक्ति दें और कोशिश सुदृढ़ हो। यदि तुम्हारा यह विचार है कि उन्होंने इन दो परस्पर दूरी वाली आयतों को इस नीयत से एकत्र नहीं किया था, तथा उनका उद्देश्य इस आस्था (मसीह की मृत्यु) को सिद्ध करने का नहीं था। तो फिर यदि तुम देखने वाली आँख रखते हो तो बताओ कि उन्होंने इन दो आयतों को क्यों एकत्र किया? और यदि तुम इसका स्पष्टीकरण न कर सको और तुम हरगिज़ नहीं कर सकोगे तो फिर अल्लाह से डरो और गुनहगारों के मार्गों पर चलने की हठ न करो।

हे प्रतिभाशाली लोगो! तुम फिर बुख़ारी के बाद अपनी मान्य किताब 'मज्मउल बिहार' पर विचार करो। उसने (हज़रत) ईसा अलैहिस्सलाम के मामले में मत भेदों का वर्णन किया है और पहले उनके जीवित रहने का वर्णन किया है और फिर कहा है कि मालिक रह. फरमाते हैं कि वह मृत्यु पा गए। हे बुद्धिमानो! मज्मउल बिहार को देखो और कुछ शर्म से काम लो। यह है वह कथन जिसका तुम इन्कार कर रहे हो और वह चीज़ जिसके बारे में अल्लाह तआला ने मिलाने का आदेश दिया है उसे काटते हो और संयम के स्थान से दूर हट गए हो। हे लोगों को भड़का कर दंगा करने वालो! क्या तुम में एक भी बुद्धिमान नहीं? तिबरानी और मुस्तदरिक में (हज़रत) आइशा रज़ि. से रिवायत है, वह वर्णन करती हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ईसा इब्ने मरयम एक सौ बीस वर्ष जीवित रहे। फिर इन गवाहियों के अतिरिक्त इब्नुल क़य्यिम अल मुहद्दिस की ओर दृष्टि डालो जिनकी दूरदर्शिता का एक संसार गवाह है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'मदारिजुस्सालिकीन' में फ़रमाया है कि यदि मूसा अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम जीवित होते तो उन्हें हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुकरण के अतिरिक्त कोई चारा न होता। इसके बाद पुस्तक अलफौज़ुल कबीर व फ़त्हुलख़बीर पर विचार करो जो खैरुलबरिय्य: सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथनों से ही क़ुर्आन की तफ्सीर है और हकीमुल उम्मत (हज़रत) शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी की पुस्तक है। वह फ़रमाते हैं 'मुतवफ्फीका'='मुमीतुका'। (अर्थात मुतवफ्फीका का अर्थ है मैं तुझे मृत्यु दूंगा)। (शेष.....)

पुस्तक: (इत्मामुलहुज्जत पृष्ठ 13-19)

सम्पादकीय

वक़्त है तौबा करो...!

"मैं शहरों को गिरते हुए देखता हूँ और आबादियों को वीरान पाता हूँ। वो वाहिद व यगाना (खुदा) एक मुद्दत तक ख़ामोश रहा और उसकी आँखों के सामने मकरूह (घृणित) काम किए गए और वो चुप रहा मगर अब वो अपना भयानक चेहरा दिखलाएगा, जिसके कान सुनने के हों सुने कि वो वक़्त दूर नहीं।"

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहि वस्सलाम)

इज़राइल और फ़िलिस्तीन के बीच प्रतीत होने वाले 'एकतरफ़ा' युद्ध ने तब खतरनाक मोड़ ले लिया जब इज़राइल ने 1 अप्रैल को सीरिया में ईरानी दूतावास पर मिसाइलें दागीं। हमले के लिए इज़राइल के कारण जो भी हों, रणनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि हमले के पीछे संभावित कारकों में से एक यह है कि नेतन्याहू लंबे समय से ईरान पर हमला करने का बहाना ढूंढ रहे हैं ताकि उनके सहयोगी, संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य देश ईरान के ख़िलाफ़ खड़े हो जाएं और फ़िलिस्तीन पर इस्राईल के हमलों से दुनिया का ध्यान हटाएँ। विश्लेषकों के मुताबिक, हमले पर ईरान की प्रतिक्रिया से मामला और उलझ सकता है।

हज़रत ख़लीफ़ा खामिस ने शुक्रवार 5 अप्रैल और फिर 12 अप्रैल 24 को अपने खुतबे में कुछ वाक्यों में सागर में गागर समान वर्तमान स्थिति का विश्लेषण किया। उन्होंने कहा कि विश्वयुद्ध शुरू हो चुका है। यह युद्ध अब फ़िलिस्तीन की सीमाओं से आगे निकल गया है। सीरिया में ईरान के दूतावास पर इज़रायल का हमला किसी भी कानून के तहत एक जघन्य अपराध है। ...खतरा है कि ईरान पर भी हमला होगा और फिर और युद्ध फैलेंगे। अल्लाह रहम करे।

जैसा कि हुज़ूर अनवर ने कहा वैसा ही हुआ। 13 अप्रैल की शाम को खबर आई कि ईरान ने सीधे इज़राईल पर मिसाइलों और ड्रोन से हमला कर दिया है। रात भर अंतरराष्ट्रीय मीडिया इस असामान्य खबर को कवर करता रहा। ड्रोन और मिसाइलें इज़राईल के हवाई क्षेत्र में कब तक पहुंचे, उनमें से कितने को रास्ते में अमेरिकी, फ्रांसीसी, ब्रिटिश और जॉर्डन की सेना ने मार गिराया, कितने इज़राईल पहुंचे, और उन्होंने कितना नुकसान किया यह एक अलग चर्चा है। चिंता की बात यह है कि युद्ध फैलता जा रहा है। फिलहाल ईरान और इज़राईल का हिसाब बराबर है यानी इज़राईल ने ईरानी दूतावास पर हमला कर दिया जिसके जवाब में ईरान ने इज़राईल पर हमला कर हिसाब चुकता कर लिया। ईरान के मुताबिक, यह हमला संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 51 के अनुसार दमिश्क में ईरानी दूतावास पर इज़राईल के हमले के जवाब में आत्मरक्षा में किया गया है और इस मामले को यहां खतम समझना चाहिए। लेकिन अगर इज़राईल ने दोबारा ऐसी गलती की तो इसका जवाब और भी सख्ती से दिया जाएगा। साथ ही ईरान ने अमेरिका को इज़राईल के साथ इस टकराव से दूर रहने की सलाह दी है। बता दें कि इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि ईरान ने अपनी जमीन से सीधे इज़राईल पर हमला किया है।

इज़राइल का युद्ध मंत्रिमंडल अगली कार्रवाई पर विचार कर रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, इज़राईल के सह-योगियों ने उसे संकेत दिया है कि अगर वह ईरान पर आगे हमला करने का इरादा रखता है तो वे उसका समर्थन नहीं करेंगे। रॉयटर्स समाचार एजेंसी द्वारा प्रकाशित एक और आश्चर्यजनक खबर यह है कि संयुक्त राष्ट्र में इज़राइल के स्थायी प्रतिनिधि गिलाद एर्दान ने शनिवार को सुरक्षा परिषद, माल्टा के अध्यक्ष को लिखे एक पत्र में उनसे जल्द से जल्द

सुरक्षा परिषद की बैठक आयोजित करने का अनुरोध किया। गिलाद ने अपने पत्र में लिखा कि ईरान के हमले से विश्व शांति को गंभीर ख़तरा पैदा हो गया है। मुझे उम्मीद है कि सुरक्षा परिषद ईरान के खिलाफ प्रभावी कदम उठाने के लिए हर संभव प्रयास करेगी।

आप सोच रहे होंगे कि इस खबर को 'आश्चर्यजनक खबर' क्यों कहा गया? वो इसलिए कि गीलाद ईरदान जिस देश के प्रतिनिधि हैं वो इसी सैक्योरिटी कौंसल की ओर से मंज़ूर की जाने वाली ग़ज़ा में फ़ौरी जंग बंदी की क़रारदाद पर जिसे 'बदक़िस्मती से' इस के किसी इत्तिहादी ने वीटो भी नहीं किया, ठीक तीन हफ़्ते गुज़र जाने के बावजूद दूर दूर तक अमल करता दिखाई नहीं दे रहा। पंद्रह में से चौदह सदस्यों की ओर से मंज़ूर होने वाली सैक्योरिटी कौंसल की एक बहुत ही अहम क़रारदाद से जिस देश के कान पर जूं तक नहीं रेंगी, वो किस मुँह से इसी सैक्योरिटी कौंसल से अपनी दादरसी का मुतालिबा कर रहा है याद रखना चाहिए कि इसराईल की ओर से ग़ज़ा पर किए जानेवाले अंधाधुंध हमलों में अब तक लगभग चौंतीस हजार लोग मारे जा चुके हैं और शहीद होने वालों में सत्तर प्रतिशत संख्या मासूम औरतों और बच्चों की है।

इज़राईल के प्रतिनिधि के अनुरोध पर अगले दिन सुरक्षा परिषद की बैठक हुई। 14 अप्रैल को हुई इस बैठक में संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस समेत ज्यादातर सदस्यों ने ईरान और इज़राईल दोनों की आक्रामक कार्रवाइयों की निंदा की और क्षेत्र में शांति को बढ़ावा देने पर ज़ोर देते हुए गाज़ा में युद्धविराम का आह्वान किया। संयुक्त राज्य अमेरिका और इज़राइल ने ईरान को आगे कोई भी कार्रवाई करने के खिलाफ चेतावनी दी है, जबकि ईरान ने कहा है कि वह न तो मामले को बढ़ाना चाहता है और न ही युद्ध चाहता है, उसने यह रुख अपनाया है कि अगर ईरान पर, उसके नागरिकों या उसके हितों पर हमला किया जाता है, तो उसे अपने बचाव का पूरा अधिकार है। इज़राईल के प्रतिनिधि ने ईरान पर अंतरराष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन करने का आरोप लगाया और उस पर प्रतिबंध लगाने का अनुरोध किया है। यह अलग बात है कि दुनिया इस बात का बेसब्री से इंतज़ार कर रही है कि ईरानी दूतावास पर हमले और संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव का पालन न करने को लेकर संयुक्त राष्ट्र इज़राईल पर प्रतिबंध लगाए। लेकिन ये तो हर कोई जानता है कि यह असंभव है!

वर्तमान समय में विश्व में शांति एवं व्यवस्था की स्थिति अत्यंत अस्त-व्यस्त है। 1939 की तरह, संयुक्त राष्ट्र अप्रभावी प्रतीत होता है। परिणामस्वरूप, दुनिया विनाश के कगार पर है और ऐसा लगता है कि ज़िम्मेदार लोगों को जवाबदेह नहीं ठहराया जा रहा है। एक छोटी सी गलती बड़े पैमाने पर युद्ध का कारण बन सकती है और उस युद्ध के परिणाम क्या होंगे यह कोई छुपी बात नहीं है।

इमाम-ए-वक्त (अहमदिया जमात के संस्थापक) ने दुनिया को इन हालात से सौ साल पहले ऐसे खबरदार कर दिया था मानो वो अपनी आँखों से उन्हें देख रहे हों फ़रमाया "ए यूरोप तू भी अमन में नहीं और ए एशिया तू भी महफ़ूज़ नहीं और ए द्वीपों के रहने वालो कोई मस्नूई (बनावटी) ख़ुदा तुम्हारी मदद नहीं करेगा। मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादीयों को वीरान पाता हूँ। वो वाहिद यगाना (खुदा) एक मुद्दत तक ख़ामोश रहा और उसकी आँखों के सामने मकरूह काम किए गए और वो चुप रहा मगर अब वो अपना खतरनाक रूप दिखलाएगा जिसके कान सुनने के हों

शेष पृष्ठ 21 पर पढ़ें

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 29.3.2024 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पवित्र एवं विवेक शील कथनों के प्रकाश में दुआ के यथार्थ, वास्तविकता, क़ुबूलियत एवं दर्शन शास्त्र का बयान।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: तथा सूर: अलबक़रा की आयत 187 की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित आयते करीमा का अनुवाद पेश करते हुए फ़रमाया-

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ.

अनुवाद - और जब मेरे बन्दे तुझसे मेरे विषय में सवाल करें तो निश्चित ही मैं निकट हूँ। मैं दुआ करने वाले की दुआ का जवाब देता हूँ, जब वह मुझे पुकारता है। अतएव चाहिए कि वे भी मेरी बात पर लब्बैक कहें तथा मुझ पर ईमान लाएँ ताकि वे हिदायत पाएँ। अल्लाह तआला ने यह आयत रोज़ों के निर्देशों के बाद रखी है, बल्कि कह सकते हैं बीच में रखी है। इससे पता चलता है कि रमज़ान का दुआओं के साथे विशेष सम्बंध है। रमज़ान में अल्लाह तआला की एक विशेष प्यार भरी दृष्टि होती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं अपने बन्दे की धारणा के अनुसार उसके साथ व्यवहार करता हूँ। जिस समय बन्दा मुझे याद करता है, मैं उस समय उसके साथ होता हूँ। यदि वह मुझे दिल में याद करे तो मैं दिल में उसे याद करता हूँ .... यदि वह चल कर मेरी ओर आए तो मैं उसकी ओर दौड़ कर जाऊँगा। अत: अल्लाह तआला तो सामान्य परिस्थितियों में भी बन्दे से ऐसा सलूक फ़रमाता है, तो रमज़ान में ख़ुदा कितना उपकार करने वाला होगा उसका हम

अनुमान भी नहीं लगा सकते, परन्तु शर्त यह है कि ये सारी बातें दिल की गहराई से हों।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला अति शर्मो हया वाला, अति दयालु एवं अति दानशील एवं उदार है। जब बन्दा दोनों हाथ उसकी ओर उठाता है तो वह उसे ख़ाली तथा निराश होकर वापस करते हुए शर्माता है। अत: हम कई बार जल्दी बाज़ी से कह देते हैं कि हमने दुआ मांगी किन्तु दुआ क़बूल न हुई परन्तु अपनी स्थिति को नहीं देखते कि कितना सत्य पूर्ण हृदय है। अल्लाह तआला को धोखा नहीं दिया जा सकता। वह तो हमारे दिल का हाल जानता है। अल्लाह तआला के खुले द्वार में दाख़िल होने के लिए उसकी अनिवार्य शर्तें पूरी करनी होंगी। इस आयत में जो फ़रमाया कि 'मेरे बन्दे' तो इसका अभिप्राय: है कि वे बन्दे जो वास्तव में अल्लाह के बन्दे बनना चाहते हैं, रमज़ान में इस काम के लिए विशेष वातावरण उपलब्ध है। जब इस वातावरण से लाभान्वित होकर ऐसी हालत होगी तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरे ऐसे बन्दों तथा मुझसे इश्क़ करने वालों से कह दो कि मैं दुआएँ सुनता हूँ और उनका जवाब भी देता हूँ। अल्लाह तआला ने स्पष्ट फ़रमाया है कि केवल ज़बानी मुहब्बत के दावे काफ़ी नहीं बल्कि तुम्हें मेरे आदेशों के अनुसार चलना पड़ेगा, अल्लाह और उसके बन्दों के अधिकार अदा करने होंगे, ईमान में मज़बूती पैदा करनी होगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ की वास्तविकता, यथार्थ, क़बूलियत तथा उसका दर्शन शास्त्र बड़े विस्तार के साथ बयान फ़रमाया है। आप अलै. फ़रमाते हैं- ख़ुदा के अस्तित्व का प्रमाण क्या है? तो इसका जवाब यह है कि मैं अति निकट हूँ अर्थात कुछ बड़े प्रमाणों की आवश्यकता नहीं है, मेरा वजूद अत्यंत निकटता के भाव से समझ में आ सकता है तथा अत्यंत सरलता पूर्वक मेरे अस्तित्व का प्रमाण उत्पन्न होता है तथा वह प्रमाण यह है कि जब कोई दुआ करने वाला मुझे पुकारे तो मैं उसकी पुकार को सुनता हूँ। आप अलै. आगे फ़रमाते हैं कि यदि सवाल हो कि ख़ुदा के वजूद का ज्ञान कैसे हो? तो उसका जवाब यह है कि इस्लाम का ख़ुदा अति निकट है यदि कोई उसे सच्चे दिल से बुलाता है तो वह जवाब देता है। दूसरे सम्प्रदायों (अर्थात धर्मों) के ख़ुदा निकट नहीं हैं बल्कि इतने अधिक दूर हैं कि उनका पता ही नहीं चलता। फ़रमाया- यदि यह कहो कि हम पुकारते हैं परन्तु जवाब नहीं मिलता तो देखो, यदि तुम एक जगह खड़े होकर एक ऐसे व्यक्ति को जो तुमसे बहुत दूर है, पुकारते हो तथा तुम्हारे अपने कानों में कोई दोष है, अल्लाह तआला जवाब दे भी दे तो क्यूँकि तुम्हारे ईमान में मज़बूती नहीं है, तुम्हारी मुहब्बत में कमी है, उसकी बातों पर अमल नहीं कर रहे। यह बहरापन तुम्हारे कानों का है जिसके कारण तुम उसकी आवाज़ को सुन नहीं सकते।

फ़रमाया- दुआ ख़ुदा तआला के अस्तित्व का बहुत बड़ा सबूत है। दुआ बड़ी दौलत एवं शक्ति है। अम्बिया अलैहिस्सलाम के जीवन की जड़ तथा उनकी सफलता का मूल एवं सच्चा माध्यम यही दुआ है। फ़रमाया- मैं नसीहत करता हूँ कि अपनी ईमानी तथा अमली शक्ति को बढ़ाने के लिए दुआओं में लगे रहो। दुआओं के माध्यम से ऐसे बदलाव होगा कि अन्तिम समय शुभ हो जाएगा। दुआ के विवेक की वास्तविकता के सम्बंध में आप अलै. फ़रमाते हैं कि मअरिफ़त अर्थात ब्रह्मज्ञान कृपा के माध्यम से

प्राप्त होता है तथा फिर कृपा के द्वारा ही शेष रहता है। कृपा मअरिफ़त को अत्यंत स्वच्छ एवं उज्जवल कर देती है। यह विचार मत करो कि हम भी हर दिन दुआ करते हैं तथा पूरी नमाज़ दुआ ही है क्यूँकि वह दुआ जो मअरिफ़त के बाद तथा कृपा के द्वारा मिलती है वह और रंग एवं दशा रखती है। वह फ़ना करने वाली चीज़ है, वह भस्म कर देने वाली आग है, वह रहमत को खींचने वाली एक चुम्बकीय शक्ति है, वह मौत है परन्तु अन्तत: जीवन देती है। दुआ ख़ुदा से आती है तथा ख़ुदा की ओर ही जाती है। दुआ से ख़ुदा इतना निकट हो जाता है जैसे कि तुम्हारी आत्मा तुम्हारे निकट है। फ़रमाया- अल्लाह जल्ला शानुह ने जो द्वार अपने प्राणियों की भलाई के लिए खोला है, वह एक ही है अर्थात दुआ। जब कोई व्यक्ति दर्द एवं व्याकुलता से उस द्वार में दाखिल होता है तो वह मौलाए करीम उसको पवित्रता एवं शुद्धता की चादर पहना देता है तथा अपनी महानता का गल्ब: उस पर इतना अधिक कर देता है कि व्यर्थ के कामों तथा बेकार की हरकतों से वह कोसों दूर भाग जाता है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- अर्थात वह व्यक्ति केवल सांसारिक बातों के लिए दुआ नहीं करता बल्कि तक़्वा एवं पवित्रता प्राप्ति के लिए दुआ करता है और यही एक मोमिन की निशानी है। फिर दुआ की गहराई को और अधिक स्पष्ट करते हुए आप अलै. एक जगह आगे फ़रमाते हैं कि कृपाओं की प्राप्ति का निकटतम मार्ग दुआ है तथा दुआ के मूल रूप के लिए अनिवार्य बातें ये हैं कि उसमें दर्द हो, व्याकुलता हो, विनयता हो। जो दुआ विनम्रता, व्याकुलता तथा टूटे हुए दिल से भरी हो, वह ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल को खींच लाती है। फ़रमाया- यह भी ख़ुदा ताअला की कृपा के बिना प्राप्त नहीं हो सकता। इसका इलाज यही है कि दुआ करता रहे चाहे कैसा ही दिल उचाट तथा रूचि से रिक्त हो जाए। फ़रमाया- जो रात को उठता है चाहे कितनी ही बेदिली तथा धैर्य हीन स्थिति हो किन्तु यदि वह उस अवस्था में भी दुआ करता है कि इलाही! दिल तेरे अधिकार में तथा आधीन है, तू उसको शुद्ध कर दे तथा पूरी अधीनता की अवस्था में उसके साथ जोड़ चाहता है तो उस अधीनता में से ही संयुक्तता निकल आएगी तथा दर्द पैदा हो जाएगा। वह देखेगा कि उस समय आत्मा अल्लाह के द्वार पर पानी के समान बहती है। फ़रमाया- दुआ एक ऐसी चीज़ है जो हर कठिनाई को सरल बना देती है। लोगों को दुआ के मूल्य एवं महत्त्व का ज्ञान नहीं है वे बहुत जल्दी निराश हो जाते हैं तथा साहस त्याग कर छोड़ बैठते हैं, जबकि दुआ एक प्रकार के निरन्तर भाव एवं स्थाइत्व को चाहती है। इसके लिए संघर्ष एवं निष्ठा शर्त है जो दुआ से ही पैदा होती है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इसके लिए हमें अपने दिल टटोलने की आवश्यकता है कि क्या यह निष्ठा की स्थिति हममें पैदा हो गई है अथवा हम पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं? फिर दुआ का दर्शन शास्त्र बयान करते हुए हुज़ूर अलै. फ़रमाते हैं- इंसान को चाहिए कि इस जीवन को अत्यधिक कुरूप मान कर इससे निकलने की कोशिश करे तथा दुआ से काम ले, क्यूँकि जब वह युक्तिपूर्ण कार्य पद्यति के माध्यम से काम करता है तथा फिर सच्ची दुआओं से काम लेता है तो अन्तत: अल्लाह तआला उसको मुक्ति दे देता है तथा वह पापी जीवन से निकल आता है क्यूँकि दुआ

भी कोई मूल्य हीन चीज़ नहीं है बल्कि वह भी एक मौत ही है। जब इस मौत को इंसान क़बूल कर लेता है तो अल्लाह तआला उसको अपराधिक जीवन से जो मृत्यु का कारण है, बचा लेता है तथा उसको एक पवित्र जीवन प्रदान करता है। फ़रमाया- अतएव चाहिए कि रातों को उठ उठ कर अत्यंत विनयता एवं दर्द के साथ तथा निवेदन के साथ ख़ुदा तआला के समक्ष अपने कष्टों को पेश करे तथा इस दुआ को उस सीमा तक पहुंचावे कि एक मौत के समान स्थिति प्रकट हो जावे, उस समय दुआ क़बूलियत के स्तर को पहुंचती है।

फ़रमाया- यह भी याद रखो कि सबसे पहले तथा सबसे महत्त्व पूर्ण बात यह है कि इंसान अपने आपको गुनाहों से पाक साफ़ करने की दुआ करे। सारी दुआओं का मूल आधार तथा मूल अंश यही है क्यूँकि जब यह दुआ क़बूल हो जाए तथा इंसान हर प्रकार के मैल कुचैल तथा बुराईयों से पाक साफ़ हो होकर ख़ुदा तआला की दृष्टि में पवित्र हो जाएगा तो फिर दूसरी दुआएँ जो उसकी मूल आवश्यकताओं के विषय में होती हैं, वे उसको मांगनी भी नहीं पड़तीं तथा वे अपने आप पूरी हो जाती हैं। दुआ की क़बूलियत के लिए क्या हालत होनी चाहिए, इसके विषय में आप अलै. फ़रमाते हैं- दुआ के अन्दर क़बूलियत का प्रभाव उस समय पैदा होता है जब वह अत्यंत उच्च व्याकुलता के स्तर तक पहुंच जाती है। यह छोटी सी बात नहीं है बल्कि महामान्य वास्तविकता है, बल्कि सच तो यह है कि जिसको ख़ुदाई का जलवा देखना हो, उसे चाहिए कि दुआ करे। निरन्तरता के साथ दुआ करते चले जाने के सम्बंध में आप अलै. फ़रमाते हैं- दुआ करते समय बेदिली तथा घबराहट से काम नहीं लेना चाहिए तथा जल्दी ही थक कर नहीं बैठ जाना चाहिए बल्कि उस समय तक हटना नहीं चाहिए जब तक दुआ अपना पूरा प्रभाव न दिखाए, जो लोग थक जाते हैं तथा घबरा जाते हैं वे गलती करते हैं क्यूँकि यह वंचित रह जाने की निशानी है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- हमें इन दिनों में जबकि अल्लाह तआला ने विशेष रूप से यह बरकत का महीना हमारे लिए उपलब्ध किया है, अपने अन्दर पाक बदलाव पैदा करते हुए दुआओं की ओर ध्यान देना चाहिए। यही हमारी दुनिया व आखिरत संवारने का साधन है। रमज़ान का अन्तिम अशरा है इसमें विशेष रूप से हमें अल्लाह तआला के आदेशों को अपने जीवन की कार्य-पद्यति बनाते हुए, ईमान में मज़बूत होते हुए, रातों को उठ कर उसके समक्ष झुक कर उसकी निकटता को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

ख़ुत्ब: जुम्अ: के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने रमज़ान के हवाले से दुआओं की तहरीक करते हुए जमाअत की उन्नतियों, यमन के बन्दी बनाए गए अहमदियों तथा मध्य पूर्व के पीड़ितों के लिए दुआ की प्रेरणा दी।

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131

☆ ☆ ☆

मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की
मृत्यु और जीवन की आस्था का महत्व
(लेखक- हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए रज़िअल्लाहु अन्हो)

अत: आवश्यक है कि उन्हीं में से कोई समरूप बना तथा उन्हीं में से किसी के समरूप बना। अत: विचार कीजिए कि आयत के अर्थ कैसे स्पष्ट हो गए وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ لٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ अर्थात् यहूद ने मसीह को क़त्ल कदापि नहीं किया और न सलीब पर मारा, परन्तु मसीह उनकी दृष्टि में मक़्तूल (वधित) और मस्लूब (फांसी दिया गया) के समान अवश्य हो गया और यही हमने ऊपर वर्णन किया है कि यहूद को मसीह के मामले में धोखा लगा रहा। लोगों ने समझा कि मसीह सलीब पर मर गया है हालांकि वह केवल मूच्छावस्था में था जो बाद में जाती रही तथा इलाज द्वारा मसीह अलैहिस्सलाम स्वस्थ हो गया। अल्लाह तआला ने मसीह अलैहिस्सलाम को यहूद के उपद्रव से बचाने का यह उपाय किया कि उनकी दृष्टि में मसीह मस्लूब (सलीब पर मारा हुआ) के समान कर दिया गया, परन्तु अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि वे विचार करते और इस मामले में केवल अनुमान का अनुसरण न करते तथा पूर्ण जांच-पड़ताल से काम लेते तो उन्हें ज्ञात हो जाता कि वे मसीह अलैहिस्सलाम को सलीब पर मारने में समर्थ नहीं हो सके अपितु كَفَّ اللّٰهُ عَنْهُ بَنِي إِسْرَائِيلَ अत: यह तो निर्णय हुआ कि मसीह अलैहिस्सलाम को सलीब पर लटकाया तो गया परन्तु वह सलीब पर मरा नहीं अपितु उसे ख़ुदा ने यहूद के बुरे इरादों से सुरक्षित रखा, परन्तु यहां स्वाभाविक तौर पर यह विचार अवश्य पैदा होता है कि मसीह अलैहिस्सलाम इसके पश्चात् गया कहां? कदाचित दर्शकों का विचार हो कि इस मामले में क़ुर्आन करीम खामोश होगा, परन्तु नहीं, जब वह किसी समस्या को लेता है तो उसके हर पहलू पर प्रकाश डालता है। अत: इस समस्या पर भी वह खामोश नहीं है। देखिए ख़ुदा तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है :-

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً وَآوَيْنٰهُمَا إِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ

(अलमोमिनून रुकू-3)

अर्थात् "हमने मसीह और उसकी मां को एक निशान बनाया और उन दोनों को हमने एक ऐसे स्थान की ओर शरण दी जो बुलन्द थी तथा जिसमें झरने जारी थे।"

इस आयत में जो शब्द آوٰی अर्थात् शरण प्रयोग हुआ है वह स्पष्ट तौर पर इस ओर संकेत कर रहा है कि यह सलीबी घटना के बाद का अवसर है जब मसीह यहूद के उपद्रव से बाल-बाल बचा। देखिए इस आयत में अल्लाह तआला कैसे स्पष्ट शब्दों में फ़रमाता है कि मसीह को एक बुलन्द स्थान की ओर शरण दी गई जो झरनों वाली थी। अत: हम देखते हैं तो कश्मीर का क्षेत्र इस वर्णन पर चरितार्थ होता है। इसलिए जब हज़रत मिर्ज़ा साहिब का इस बात की ओर ध्यान गया तो एक लम्बे समय की छान-बीन के पश्चात् यह स्पष्ट ज्ञात हो गया कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम सलीब से बचकर अफ़गानिस्तान और कश्मीर की ओर प्रवास करके आ गए थे। इसका कारण यह है कि मसीह का अवतरण बनी इस्राईल की खोई हुई भेड़ों के लिए था, जैसा कि स्वयं मसीह के शब्दों से स्पष्ट है कि मैं बनी इस्राईल की खोई हुई भेड़ों की ओर भेजा गया हूँ। अत:

इतिहास हमें बताता है कि बनी-इस्राईल की कुछ जातियां मसीह से पूर्व अफ़गानिस्तान और कश्मीर के क्षेत्रों में आकर आबाद हो गई थीं। देख लीजिए कि कश्मीर का शब्द ही इस ओर संकेत कर रहा है। यह 'काफ़' और 'शमीर' को मिलाने से बना है जो वास्तव में 'अशीर' था तथा बिगड़ कर 'शीर' और फिर उच्चारण की कठिनाई के कारण 'शमीर' बन गया तो जैसे कश्मीर के अर्थ हुए 'कअशिर' अर्थात् 'अशीर' की तरह का देश। संसार जानता है कि अशीर इब्रानी भाषा में असीरिया अर्थात् शाम के देश को कहते हैं। यह कश्मीर का नाम बनी इस्राईल ने ही आकर रखा था, क्योंकि नियम है कि अपने मूल देश के नाम पर लोग अपने नए देशों के नाम रख लिया करते हैं। हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम ने इतनी खोज के पश्चात् कश्मीर का इतिहास तलाश किया तो पुरानी घटनाओं में मिल गया कि लगभग उन्नीस सौ वर्ष पूर्व किसी बाहरी देश से यहां एक शहज़ादा नबी आया था जिसका नाम यूज़ आसिफ़ था जो स्पष्ट तौर पर यसू शब्द से बिगड़ा हुआ मालूम होता है। अन्तत: मसीह अलैहिस्सलाम की क़ब्र भी मुहल्ला ख़ानयार श्रीनगर में मिल गई। इस क़ब्र के बारे में भी वहीं की गवाही और इतिहास से पता किया गया तो यही विदित हुआ कि यह उसी यूज़ आसिफ़ की क़ब्र है जो उन्नीस सौ वर्ष पूर्व कश्मीर में आया था। अतिरिक्त सबूत यह मिला कि वह क़ब्र और उसके साथ वाली मसीह की माँ की क़ब्र* ठीक उसी ढंग पर बनी हुई हैं जिस प्रकार बनी इस्राईल की क़ब्रें होती थीं। इसके अतिरिक्त मसीह के प्रवास का एक प्रमाण यह है कि मसीह शब्द के अर्थ लम्बी यात्रा करने वाले के हैं तथा स्पष्ट है कि मसीह के अतिरिक्त अन्य किसी नबी ने इतनी लम्बी यात्राएं नहीं कीं। एक हदीस में भी आया है कि :-

اَوْحَی اللّٰہُ تَعَالٰی اِلٰی عِیْسٰی اَنْ یَّا عِیْسٰی اِنْتَقِلْ مِنْ مَّکَانٍ اِلٰی مَکَانٍ لِئَلَّا تُعْرَفَ فَتُؤْذٰی

(कन्ज़ुल उम्माल, जिल्द द्वितीय, पृष्ठ-34)

अर्थात् "अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा को वह्यी की कि हे ईसा तू एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर निकल जा ताकि ऐसा न हो कि तू पहचाना जाए और तुझे कष्ट में डाला जाए।"

यह हदीस स्पष्टता के साथ सलीबी घटना के पश्चात् की परिस्थितियों की ओर संकेत करती है क्योंकि उसी समय यह भय उत्पन्न हुआ था कि यदि यहूद मसीह को दोबारा देख लेंगे तो पुन: उपद्रव करेंगे।

नुज़ूल की वास्तविकता

तत्पश्चात् हम फिर अपने मूल लेख की ओर लौटते हैं जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के रफ़ा और नुज़ूल के साथ संबंध रखता है। हमारे विरोधी मौलवी लोग मसीह अलैहिस्सलाम के आकाश पर जीवित जाने के सबूत में एक तर्क यह दिया करते हैं कि हदीसों में आने वाले मसीह के संबंध में नुज़ूल का शब्द प्रयोग किया गया है जो उतरने के अर्थों में आता है। इस से सिद्ध हुआ कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम आकाश से उतरेंगे और स्पष्ट है कि आकाश से वह केवल इस स्थिति में ही उतर सकते हैं जब कि वह आकाश की ओर उठाए गए हों। इसके उत्तर में भली-भांति स्मरण रखना चाहिए कि प्रथम तो किसी सही हदीस में मसीह के संबंध में नुज़ूल के साथ (سَماء) का शब्द प्रयोग नहीं हुआ ताकि आकाश से उतरने के अर्थ लिए जाएं।

* यह भूल से लिखा गया है। वास्तव में उनके साथ वाली क़ब्र एक अन्य बुज़ुर्ग की है। (प्रकाशक)

हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम ने कई हज़ार रुपये का इनाम उस व्यक्ति के लिए निर्धारित किया जो कोई मरफ़ू* मुत्तसिल हदीस ऐसी प्रस्तुत करे जिसमें मसीह के बारे में जीवित आकाश पर जाने और फिर आकाश से उतरने के शब्द नबी करीम (स.अ.व.)ने फ़रमाए हों, परन्तु आज तक कोई विरोधी ऐसी हदीस प्रस्तुत नहीं कर सका। इस से दर्शकगण परिणाम निकाल सकते हैं कि ऐसी कोई हदीस उपलब्ध ही नहीं।

इसके अतिरिक्त नुज़ूल (उतरना) के अर्थ पर भी विचार नहीं किया गया। अरबी भाषा में नुज़ूल के अर्थ प्रकट होने और आने के भी हैं जैसा कि अरबी शब्द कोशों से प्रकट है। स्वयं ख़ुदा तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है:-

قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ (सूरह तलाक़ रकू-2)

अर्थात् "अल्लाह ने तुम्हारी ओर याद कराने वाला रसूल भेजा है जो तुम पर अल्लाह की आयतें पढ़ता है।"

इस आयत में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में 'नुज़ूल' का शब्द प्रयोग किया गया है, हालांकि सब जानते हैं कि नबी करीम (स.अ.व.) आकाश से नहीं उतरे थे अपित अरबों में ही जन्म लेकर अवतरित किए गए थे। अत: क़ुर्आन करीम फ़रमाता है :-

قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ

अर्थात् "अल्लाह तआला ने यह रसूल तुम में तुम्हीं में से प्रकट किया है।"

फिर क़ुर्आन करीम फ़रमाता है :- وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ

अर्थात् "हमने लोहा उतारा है जिसमें युद्ध का सामान है तथा लोगों के लिए और भी बहुत से लाभ हैं।" (सूरह हदीद रुकू-3)

लीजिए लोहा भी आकाश से उतर रहा है, हालांकि सब उसे पृथ्वी से ही खोद कर निकालते हुए देखते हैं। पुन: फ़रमाता -

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ (आराफ़ रकू-3)

अर्थात् "हे आदम की संतान (लोग) हमने तुम पर लिबास उतारा जो तुम्हारे नंगेपन को ढकता है।"

इस आयत में लिबास के लिए भी नुज़ूल का शब्द वर्णन हुआ है, हालांकि लिबास तो रुई इत्यादि से पृथ्वी पर तैयार किया जाता है। इसी प्रकार क़ुर्आन करीम फ़रमाता है:-

وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ (ज़ुमर रुकू-1)

अर्थात् "ख़ुदा ने तुम पर चौपाए (जानवर) उतारे हैं।" हालांकि घोड़े, गधे और बैल सब पृथ्वी पर ही पैदा होते हैं।

इन समस्त आयतों से स्पष्ट है कि नुज़ूल के अर्थ शाब्दिक तौर पर हमेशा उतरने के ही नहीं होते अपितु नुज़ूल का शब्द अधिकतर उस वस्तु के लिए प्रयोग किया जाता है जो अल्लाह तआला की ओर से मनुष्य को पुरस्कार के तौर पर दी जाती है और चूंकि ऐसी ने'मत ख़ुदा की ओर से आती है इसलिए उसके बारे में

*वह हदीस जिसकी सनद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुँचे और मुत्तसिल यह कि उस हदीस की सनद में आदि से अन्त तक वर्णनकर्ताओं में से कोई एक भी वर्णनकर्ता न टूटे। (अनुवादक)

नुज़ूल का शब्द प्रयोग कर लिया जाता है अपितु प्राय: अरबी बोल-चाल में नुज़ूल का शब्द मात्र प्रकट के अर्थ भी देता है और यह तो लगभग सभी लोग जानते हैं कि नज़ील का शब्द मुसाफ़िर पर भी बोला जाता है और जिस स्थान पर सफर के बाद ठहरा जाए उसे मन्ज़िल कहते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ हदीसों में मसीह के बारे में बअस और ख़ुरूज (بَعَث اور خُرُوج) के शब्द भी आए हैं (कन्ज़ुल उम्माल) जो नुज़ूल के अर्थों का बड़ी स्पष्टता के साथ निर्धारण कर देते हैं क्योंकि इस स्थिति में जो भाव बअस, ख़ुरूज और नुज़ूल में पाया जाता है (अर्थात् प्रकट होने का) वही सही और उचित माना जाएगा। अत: शब्द नुज़ूल से यह परिणाम निकालना कि मसीह आकाश से उतरेगा एक नितान्त ग़लत मार्ग है जिस से प्रत्येक बुद्धिमान को बचना चाहिए। क़ुर्आन करीम किसी मनुष्य के पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर जाने को स्पष्ट शब्दों में निषिद्ध ठहराता है। मसीह के जीवित आकाश पर जा बैठने की कोई हदीस साक्ष्य नहीं देती अपितु विरोधी है तथा मानव-बुद्धि इस आस्था को दूर से ही धक्के देती है तो फिर अकारण हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के आकाश पर बैठे होने की कल्पना क्यों की जाए।

अध्याय-द्वितीय

(मसीह की मृत्यु के विषय पर बहस)

इस लेख का दूसरा भाग विशेषकर मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु से सम्बद्ध है। अब तक मैंने यह सिद्ध किया है कि हज़रत मसीह आकाश पर पार्थिव शरीर के साथ जीवित नहीं गए तथा इसके समर्थन में बहुत सी क़ुर्आनी आयतें और नबी करीम (स.अ.व.)की हदीसें प्रस्तुत की हैं। यदि कोई सज्जन ठंडे हृदय से विचार करें तो उन पर प्रकाशमान दिन की तरह प्रकट हो जाएगा कि इस्लामी शिक्षानुसार यह कदापि सिद्ध नहीं होता कि मसीह नासिरी को पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर उठा लिया गया। अब मैं बताता हूँ कि मसीह मृत्यु भी पा चुका है।

नबी करीम से पूर्व जितने रसूल गुज़रे हैं सब मृत्यु पा चुके हैं।

क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ اَفَا۟ىِٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ

(सूरह आले इमरान रुकू-15)

अर्थात् मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) अल्लाह के केवल एक रसूल हैं और उन से पहले जितने रसूल हुए हैं सब गुज़र गए तो क्या यदि मुहम्मद (स.अ.व.) भी स्वाभाविक तौर पर मृत्यु पा जाएं अथवा क़त्ल कर दिए जाएं तो तुम अपनी एडिय़ों के बल फिर जाओगे?

यह आयत स्पष्ट तौर पर नबी करीम (स.अ.व.) से पूर्व गुज़रे हुए नबियों की मृत्यु की सूचना देती है और उनके बारे में बताती है कि वे सब के सब मृत्यु पा चुके हैं और स्पष्ट है कि हज़रत मसीह नासिरी भी एक रसूल थे जो नबी करीम (स.अ.व.) से छ: सौ वर्ष पूर्व अवतरित किए गए थे। अत: अनिवार्य तौर पर मानना पड़ा कि वह भी मृत्यु पा चुके हैं। यदि इस आयत पर यह एतिराज़ किया जाए कि اَلَخ के अर्थ केवल

गुज़र जाने के हैं इसलिए इस आयत से निश्चित तौर पर मृत्यु सिद्ध नहीं होती, क्योंकि यदि एक व्यक्ति जीवित आकाश पर उठा लिया जाए तो उसके बारे में भी कहा जा सकता है कि वह नहीं रहा और गुज़र गया है तो इस आरोप के उत्तर में दो बातों का स्मरण रखना आवश्यक है। प्रथम- यह कि अरबी भाषा में خَلَا (ख़ला) के अर्थ مَاتَ (अर्थात् मर गया) के भी होते हैं। अत: ताजुल उरूस जो अरबी भाषा का नितान्त प्रमाणित शब्द-कोश है उसमें लिखा है कि- خَلَا فُلَانٌ : اِذَامَاتَ "अर्थात् जब कोई व्यक्ति मर जाए तो कहते हैं कि "ख़ला फ़ुलानुन" अर्थात् अमुक व्यक्ति मर गया"

इसका दूसरा उत्तर यह है कि स्वयं इस आयत में अल्लाह तआला ने 'ख़ला' के अर्थों का निर्धारण कर दिया है, जैसा कि फ़रमाया :- اَفَاِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ अर्थात् "यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह स्वाभाविक मृत्यु से मर जाएं या क़त्ल कर दिए जाएं।"

तो मानो यहां 'ख़लत' शब्द के अर्थ अनिवार्य रूप से इन दो प्रकारों में से एक के होने चाहिएं अर्थात् या तो यह कि वह स्वाभाविक मौत से मर गए और या वह क़त्ल हुए। ये शब्द कि اَفَاِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ (अफ़इम्माता औ क़ुतिला) स्पष्ट बता रहे हैं कि पूर्व नबियों का गुज़र जाना इन्हीं दो प्रकारों में से किसी एक में हुआ था अर्थात् या तो वे स्वाभाविक मौत से मृत्यु पाते रहे और या फिर क़त्ल होते रहे। यदि पूर्व नबियों में से कोई नबी आकाश की ओर उठाया गया होता अथवा उपरोक्त दोनों प्रकारों के अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार से किसी पूर्व नबी का गुज़र जाना घटित हुआ होता तो यहां अनिवार्य तौर पर उस प्रकार का वर्णन होना चाहिए था या कम से कम मसीह का अपवाद स्वरूप ही वर्णन कर दिया जाता, परन्तु ऐसा नहीं किया गया। इस से स्पष्ट है कि उपरोक्त आयत में ख़ला के अर्थ या तो स्वाभाविक मृत्यु द्वारा मरने के लिए जाएंगे और या क़त्ल के द्वारा इस नश्वर संसार को छोड़ जाने के, परन्तु मसीह के बारे में अल्लाह तआला की स्पष्ट साक्ष्य विद्यमान है कि مَاقَتَلُوْهُ (मा क़तलूहो) अर्थात् मसीह के विरोधी उसके क़त्ल पर समर्थ नहीं हुए। इसलिए अनिवार्य तौर पर दूसरा प्रकार ही स्वीकार करना होगा अर्थात् यह मानना होगा कि मसीह ने मृत्यु के द्वारा यह संसार छोड़ा है और यही हमारा उद्देश्य है। बहस के अन्तर्गत आयत की व्याख्या करते हुए व्याख्याकार समान्यत: इस आयत के साथ ये शब्द संलग्न कर देते हैं कि :- وَسَيَخْلُوْا كَمَا خَلَوْا بِالْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ

अर्थात् "नबी करीम (स.अ.व.) भी संसार को इसी प्रकार छोड़ जाएंगे जिस प्रकार पूर्व नबी मृत्यु के द्वारा या कत्ल द्वारा संसार को छोड़ते रहे हैं।"

मसीह की मृत्यु पर सहाबा की सर्वसम्मति

इस आयत के अर्थ और भी अधिक स्पष्ट हो जाते हैं जब हम इसे एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना के प्रकाश में देखते हैं। हदीस में लिखा है कि जब नबी करीम (स.अ.व.) की मृत्यु हुई तो संयोग ऐसा हुआ कि हज़रत उमर रज़ि. अभी तक आप (स.अ.व.) को जीवित ही समझ रहे थे और कहते थे कि आप फिर वापस आ जाएंगे तथा काफ़िरों और मुनाफ़िकों (द्वय मुखी लोग) का विनाश करेंगे। वह अपने इस विचार पर इतने दृढ़ थे कि उन्होंने तलवार खींच कर घोषणा आरम्भ कर दी कि जो व्यक्ति भी नबी करीम (स.अ.व.) को

मृत्यु प्राप्त कहेगा मैं उसकी गर्दन काट दूँगा। उस समय हज़रत अबू बकर खड़े हुए और सहाबा के सामने यही आयत पढ़ी कि :-

وَمَامُحَمَّدٌاِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ

अर्थात् "मुहम्मद (स.अ.व.) तो केवल एक रसूल थे उन से पूर्व जो रसूल गुज़रे हैं वे सब मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं "....अन्त तक

लिखा है कि हज़रत उमर रज़ि. पर इस बात के सुनते ही इतना शोक व्याप्त हुआ कि वह पृथ्वी पर गिर पड़े, क्योंकि उन्होंने उस समय महसूस कर लिया जिसे वह अपने शोक के सामयिक आवेग में महसूस नहीं कर रहे थे कि उनका प्रिय स्वामी भी अल्लाह का केवल एक रसूल था जिस ने पूर्व नबियों की भांति मौत के द्वार से गुज़रना था। (बुख़ारी किताबुल मनाक़िब)

अब प्रश्न यह है कि यदि कोई पूर्व नबी इस समय तक जीवित होता तो हज़रत अबू बकर रज़ि. के इस सबूत पर कि चूंकि पहले समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं इसलिए स्वाभाविक तौर पर रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को भी मृत्यु पाना आवश्यक है। आदरणीय सहाबा अवश्य ऐतिराज़ करते और विशेष तौर पर हज़रत उमर रज़ि. और उनकी विचारधारा से सहमत लोग जो पहले ही से आंहज़रत (स.अ.व.) को अभी तक जीवित समझ रहे थे वे अवश्य चिल्लाने लगते कि यह क्या बात कह रहे हो? परन्तु समस्त सहाबा ने हज़रत अबू बकर रज़ि. के साथ सहमत होकर इस तर्क पर मुहर लगा दी कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) से पूर्व समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं। मानो आंहज़रत (स.अ.व.) के पश्चात् सहाबा रज़ि. की सब से पहली सर्वसम्मति (इज्माअ) (अपितु सत्य यह है कि इस्लाम का एकमात्र सर्व सम्मति) यही थी कि पूर्व अंबिया सब के सब मृत्यु पा चुके हैं। विचारणीय है कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की मृत्यु पर यह कैसा साफ और स्पष्ट सबूत है, परन्तु खेद कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम के विरोधी इस प्रकार के साफ और ठोस सबूत की ओर भी ध्यान नहीं देते और यही कहे जाते हैं कि :

بَلْ نَتَّبِعُ مَا اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَاءَنَا

(अर्थात- हम तो उसी का अनुसरण करेंगे जो हमारे बापदाद करते रहे) परन्तु समाधान योग्य बात यह है कि اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْئًا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ (अर्थात- लेकिन अगर उनके माँ बाप इस बात को न तो समझते हों और न उनको हिदायत मिली हो क्या तब भी (वह ऐसा ही करेंगे)। अच्छा अब आगे चलिए।

मसीह नासिरी (ईसा अलैहिस्सलाम) का 'रफ़ा' मृत्योपरान्त हुआ

क़ुर्आन करीम फ़रमाता है:-

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ (सूरह आले इमरान रकू-6)

"अर्थात् हे ईसा मैं तुझे तेरी स्वाभाविक मृत्यु से मौत दूंगा और तुझे अपनी ओर उठाऊँगा और तुझे पवित्र करूँगा उन लोगों से जिन्होंने कुफ्र किया और तेरे अनुयायियों का तेरे इन्कार करने वालों पर प्रलय तक प्रभुत्व रखूँगा।"

इस आयत में अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से चार वादे फ़रमाए हैं जो विशेष क्रम में क्रमबद्ध हैं। अर्थात् (1) मृत्यु (2) रफ़ा (3) पवित्रता (4) विजय और प्रभुत्व। अत: यह विचार करना कि पिछले तीन वादे तो पूरे हो चुके हैं, परन्तु पहला वादा अभी तक पूरा होने में नहीं आया सरासर हठधर्मी है। क़ुर्आन करीम अल्लाह तआला का कलाम है और उसके शब्द मोतियों की भांति अपने-अपने स्थान पर जड़े गए हैं। किसी को यह अधिकार नहीं कि क़ुर्आन के शब्दों को इधर-उधर कर दे। यदि इस प्रकार से होने लगे तो शान्ति उठ जाए। अल्लाह तआला यहूदियों को इसलिए धिक्कारता और फ़टकारता है कि-

يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ

"अर्थात् वे दुर्भाग्यशाली लोग ख़ुदाई कलाम में काट-छांट करते तथा शब्दों को उनके स्थान से उलट-पुलट कर देते थे।"

परन्तु अत्यन्त खेद कि आज मुसलमानों ने भी वही किया जो यहूदी लोग किया करते थे और केवल मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम के विरोध के कारण कह दिया कि इस आयत में वास्तव में 'राफ़िओका' पहले रखना चाहिए और मुतवफ़्फ़ीका (مُتَوَفِّيكَ) बाद में रखना चाहिए ताकि किसी प्रकार मसीह जीवित सिद्ध हो जाए, परन्तु कम से कम कुछ व्याख्याकारों ने तथा आजकल के मौलवियों के इस प्रयास ने हमें स्पष्ट तौर पर बता दिया कि 'मुतवफ़्फ़ीका' के अर्थ उनके निकट भी वास्तव में मृत्यु देने के ही हैं अन्यथा पहले और बाद में रखने के प्रयास के क्या अर्थ? क्योंकि उनका हृदय कहता है कि 'मुतवफ़्फ़ीका' के अर्थ मारने के ही हैं, इसलिए वे शब्दों को आगे-पीछे करने की आड़ लेकर तावील (व्याख्या) करना चाहते हैं। बहरहाल अब मामला बिल्कुल स्पष्ट है। अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा से वादा किया कि वह उसे मृत्यु देगा और उसे अपनी ओर उठाएगा और उसे काफ़िरों के आरोपों से पवित्र करेगा और उसके अनुयायियों को उसके इन्कार करने वालों पर प्रलय तक विजयी रखेगा। हमारे विरोधी यह स्वीकार करते हैं कि दूसरा वादा जो मसीह अलैहिस्सलाम के रफ़ा से संबंध रखता है वह पूरा हो चुका तथा ख़ुदा ने मसीह अलैहिस्सलाम को अपनी ओर उठा लिया। तीसरे वादे के अनुसार क़ुर्आन करीम के द्वारा अल्लाह ने यहूदियों के आरोपों से मसीह को पवित्र भी सिद्ध कर दिया और अन्तत: चौथे वादे के अनुसार मसीह के अनुयायियों को उसके इन्कार करने वालों पर प्रभुत्व भी प्राप्त हो गया, परन्तु आश्चर्य है कि अभी तक सब से प्रथम वादा अर्थात् मृत्यु वाला वादा पूर्ण नहीं हुआ परन्तु मज़ेदार बात यह है कि यदि यह मान लिया जाए कि पहला वादा अभी पूरा नहीं हुआ तो फिर यह मानना पड़ेगा कि इस स्थिति में इस वादे के पूरा होने का समय बहरहाल अन्तिम वादे के पश्चात् आएगा क्योंकि अन्तिम तीन वादे पूर्ण हो चुके हैं परन्तु कठिनाई यह है कि अन्तिम वादे का दामन प्रलय तक फैला हुआ है जैसा कि के शब्दों से प्रकट है तो जैसे प्रलय तक तो हज़रत मसीह पर मृत्यु आती नहीं और जब प्रलय आएगी और समस्त संसार के मुर्दे क़ब्रों से उठाए जाएंगे उस समय मसीह की रूह निकाली जाएगी, परन्तु इसमें एक अन्य कठिनाई का सामना है और वह यह कि प्रलय का दिन तो जीवित करने का दिन है न कि मारने का। तो जैसे परिणाम यह निकला कि हज़रत मसीह मृत्यु के पन्जे से बिल्कुल ही छूट गए। चलिए निर्णय हुआ। इस विषय पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब उल्लेख करते हुए फ़रमाते हैं:-

"तवफ़्फ़ा का शब्द यदि आयत के सर से उठा दिया जाए तो उसे किसी दूसरे स्थान में प्रलय से पूर्व रखने की कोई जगह नहीं। अत: इस से तो यह अनिवार्य हो जाता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम प्रलय के पश्चात् मरेंगे और पहले मरने से यह क्रम बाधक है। अत: देखना चाहिए कि क़ुर्आन करीम का यह चमत्कार है कि हमारे विरोधी यहूदियों की भांति क़ुर्आन करीम में परिवर्तन करने पर सहमत तो हुए, परन्तु समर्थ नहीं हो सके और कोई स्थान दिखाई नहीं देता जहां वाक्य राफ़िओका को उसके स्थान से उठाकर उस स्थान पर रखा जाए। प्रत्येक स्थान की पूर्ति इस प्रकार हो चुकी है कि हस्तक्षेप की गुंजायश नहीं।"

(ज़मीमा बराहीन अहमदिया भाग पंचम)

अत: हम विवश हैं कि जो क्रम नीतिवान और बहुत ज्ञान रखने वाले अल्लाह ने क़ुर्आनी शब्दों का रखा है उसे स्वीकार करें और अपनी ओर से एक नया क़ुर्आन न बनाएं। चूंकि पिछले तीन वादे पूरे हो चुके हैं इसलिए अनिवार्य तौर पर स्वीकार करना पड़ा कि पहला वादा जो मसीह की मृत्यु के बारे में है वह भी पूरा हो चुका होगा। सांकेतिक तौर पर यह आयत रफ़ा के अर्थ भी स्पष्ट कर रही है, क्योंकि अल्लाह तआला ने रफ़ा का वादा मृत्यु के वादे के पश्चात् रखा है। अत: ज्ञात हुआ कि यहां रफ़ा उन्हीं अर्थों में है जो आयत ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ में वर्णन किए गए हैं अर्थात् जिस प्रकार मृत्यु के पश्चात् सदाचारी रूहों का ख़ुदा तआला की ओर रफ़ा हुआ करता है, बुरी रूहों का अल्लाह तआला की ओर रफ़ा नहीं हुआ करता। इन्हीं अर्थों में मसीह का रफ़ा हुआ।

'मुतवफ़्फ़ीका' शब्द के अर्थ

इस आयत के बारे में कुछ विरोधी कहा करते हैं कि इसमें जो मुतवफ़्फ़ीका शब्द आया है उसके अर्थ रूह निकालने अर्थात् मृत्यु देने के नहीं हैं अपितु पूर्ण रूप से उठा लेने के हैं। इसके उत्तर में पूर्व इसके कि मैं शब्दकोष के अनुसार तवफ़्फ़ा के अर्थ वर्णन करूँ, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम का एक वक्तव्य प्रस्तुत करता हूँ जिसमें इस ऐतिराज़ का उत्तर दिया गया है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:-

"ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन शरीफ़ के 23 स्थानों में तवफ़्फ़ा शब्द को रूह निकालने के अवसर पर प्रयोग किया है। आरम्भ से अन्त तक क़ुर्आन शरीफ़ में तवफ़्फ़ी का शब्द ऐसा नहीं जिस के अर्थ रूह निकालने और मृत्यु देने के अतिरिक्त कोई और हों और फिर सबूत पर सबूत यह कि सही बुख़ारी में इब्ने अब्बास से 'मुतवफ़्फ़ीका' के अर्थ 'मुमीतुका' लिखे हैं। इसी प्रकार तफ़्सीर 'फ़ौज़ुलकबीर' में भी यही अर्थ लिखे हैं तथा किताब ऐनी तफ़्सीर बुख़ारी में इस कथन के प्रमाण का क्रम वर्णन किया है..... हदीसों में जहां कहीं तवफ़्फ़ा का शब्द किसी रूट में आया है वह मारने के ही अर्थ में आया है। जैसा कि हदीस के विद्वान भली-भांति जानते हैं तथा भाषा विज्ञान में यह प्रमाणित, मान्य और सर्वसम्मत बात है कि जहां ख़ुदा कर्ता और मनुष्य कर्म हो और शब्द तवफ़्फ़ा हो वहां मारने के अतिरिक्त अन्य कोई अर्थ नहीं होते। अरब के समस्त कवियों के काव्य संग्रह इस पर साक्षी हैं। अत: इस से अधिक अन्याय क्या होगा कि क़ुर्आन उच्च स्वर में कह रहा है,

परन्तु कोई नहीं सुनता, हदीस गवाही दे रही है परन्तु कोई परवाह नहीं करता, अरब का शब्दकोश साक्ष्य प्रस्तुत कर रहा है परन्तु कोई देखने का कष्ट नहीं करता, अरब के कवियों के काव्य संग्रह इस शब्द के मुहावरे बता रहे हैं परन्तु किसी के कान सुनने के लिए तैयार नहीं होते।" (तुहफ़ा गोलड़विया, पृष्ठ-4)

अधिक सन्तुष्टि के लिए शब्दकोश देखिए, छोटे-मोटे शब्दकोश की साक्ष्य तो हमारे मौलवी लोग शायद टाल दें, इसलिए हम सब से बड़ी प्रसिद्ध और प्रमाणित किताब (डिक्शनरी) 'ताजुलउरूस' को साक्ष्य के तौर पर प्रस्तुत करते हैं। ताजुलउरूस में लिखा है:- تَوَفَّاهُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ اِذَا قَبَضَ نَفْسَهٗ

अर्थात् " 'तवफ़्फ़ाहुल्लाहो' के ये अर्थ हैं कि ख़ुदा ने उसकी रूह (आत्मा) निकाल ली" (अपने अधिकार में ले लिया) और यह भी लिखा है:- تُوُفِّیَ فُلَانٌ : اِذَامَاتَ

अर्थात् " 'तुवुफ़्फ़िया फ़ुलानुन' के ये अर्थ हैं कि अमुक व्यक्ति मर गया"

फिर प्रकाण्ड विद्वान ज़मख़शरी लेखक "तफ़्सीर कश्शाफ़" मुतवफ़्फ़ीका के अर्थ लिखते हैं:-

مُمِیْتُكَ حَتْفَ اَنْفِكَ अर्थात् "मैं तुझे तेरी स्वाभाविक मौत से मृत्यु दूंगा।"

और सब से बढ़कर यह कि स्वयं सही बुख़ारी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. की रिवायत से लिखा है कि 'मुतवफ़्फ़ीका' के अर्थ मुमीतुका के हैं। अर्थात मैं तुम्हें मृत्यु दूँगा। (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर)

अत: यह बात निश्चित है कि बहस के अन्तर्गत आयत में 'इन्नी मुतवफ़्फ़ीका' के अर्थ केवल यही हैं कि मैं तुझे मृत्यु दूँगा। इसमें सन्देह नहीं कि चूंकि तवफ़्फ़ा के वास्तविक अर्थ रूह निकालने के हैं जो एक सीमा तक निद्रावस्था में भी होता है, इसलिए तवफ़्फ़ा का शब्द प्राय: केवल नींद के समय रूह निकालने के अर्थ भी देता है, परन्तु इन अर्थों के लिए किसी लक्षण का होना अनिवार्य होता है अन्यथा जब यह शब्द बिना लक्षण या बिना अनुकूलता के प्रयोग हो तथा ख़ुदा कर्ता हो और मनुष्य कर्म तो इसके अर्थ निश्चित तौर पर मृत्यु देने के ही होते हैं। अहमदिया जमाअत के प्रवर्तक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम ने विरोधी मौलवियों को चुनौती दी थी कि वे क़ुर्आन करीम, हदीस अथवा अरब की किसी प्रमाणित किताब में यह दिखादें कि जब ख़ुदा कर्ता हो और कोई कथित मनुष्य कर्म हो तो तवफ़्फ़ा के अर्थ रूह क़ब्ज़ (निकालने) के अतिरिक्त कुछ और अभिप्राय हों, परन्तु आज तक कोई विरोधी मौलवी इसका उत्तर नहीं दे सका। इसके अतिरिक्त स्वयं संबंधित आयत भी 'मुतवफ़्फ़ीका' के अर्थ स्वयं स्पष्ट बता रही है, क्योंकि यदि मुतवफ़्फ़ीका के अर्थ ये हैं कि पूरा उठा लेना तो 'राफ़िओका' का शब्द पृथक वर्णन करने से क्या लाभ था इस आयत में राफ़ओका का शब्द इस बात पर निश्चित साक्ष्य है कि 'मुतवफ़्फ़ीका' का शब्द 'राफ़िओका'से पृथक अर्थ रखता है। फिर ख़ुदा तआला नबी करीम (स.अ.व.) को फ़रमाता है:-

وَاِمَّا نُرِیَنَّكَ بَعْضَ الَّذِیْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّیَنَّكَ (यूनुस रुकू-5)

अर्थात् "हम काफ़िरों को अज़ाब के जो वादे दे रहे हैं उन में कुछ या तो तुझे दिखा देंगे और या तुझे मृत्यु दे देंगे।"

फिर क़ुर्आन में लिखा है:- رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَیْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِیْنَ (आराफ़ रुकू-14) "अर्थात् हे

हमारे रब्ब। हमें धैर्य की पूर्ण सामर्थ्य प्रदान कर और हमें ऐसी अवस्था में मृत्यु दे कि हम तेरे आज्ञाकारी हों।"

अत: तवफ़्फ़ा के शब्द पर हठधर्मी करना अधम स्तर की अज्ञानता है और उस पर आश्चर्य यह कि जब किसी अन्य व्यक्ति के लिए यही तवफ़्फ़ा का शब्द प्रयोग हो तो उसके अर्थ मृत्यु देने के किए जाते हैं, परन्तु यह शब्द जहां हज़रत ईसा के बारे में जहां प्रयोग हुआ तो तुरन्त उसके अर्थ आकाश की ओर उठा लेने के कर दिए जाते हैं! रसूलों में सर्वश्रेष्ठ हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) के सन्दर्भ में मृत्यु देने के अर्थ रहे, परन्तु हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में आकाश पर ले जाने के अर्थ पैदा हो गए। यह कैसा न्याय है और कैसा स्वाभिमान है? इस से हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं।

मसीह की अपनी मृत्यु के बारे में स्वयं स्वीकारोक्ति

यहां तक मैंने जो आयतें मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु के बारे में लिखी हैं उसके द्वारा नितान्त स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं और इस बारे में स्वयं ख़ुदा की साक्ष्य का उल्लेख हो चुका है। वास्तव में यदि अनुचित पक्षपात की पट्टी आँखों से उतार कर देखा जाए तो मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु की समस्या ऐसी स्पष्ट है कि किसी सन्देह की गुंजायश नहीं, परन्तु जिन्होंने नहीं मानना, वे नहीं मानते। अत: अब मैं मसीह की मृत्यु के बारे में स्वयं हज़रत मसीह की ही साक्ष्य प्रस्तुत करता हूँ शायद यदि ख़ुदा तआला की साक्ष्य पर पूर्ण सन्तुष्टि न हुई हो तो मसीह का अपना बयान ही किसी मार्ग भटके व्यक्ति की सन्तुष्टि का कारण हो जाए। क़ुर्आन करीम फ़रमाता है:-

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ ..... وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ

(सूरह अल माइदा)

(शेष आगे ...)

पृष्ठ 7 का शेष .....संपादकीय

सुने कि वो वक़्त दूर नहीं। मैंने सभी को खुदा की अमान (सुरक्षा) के तहत इकट्ठा करने की कोशिश की, लेकिन यह निश्चित था कि नियति का लिखा पूरा होता। मैं सच सच कहता हूं कि इस देश का नंबर भी करीब आ रहा है। नूह का समय तुम्हारी आंखों के सामने आ जाएगा और लूत (नबी) के देश की घटनाओं को अपनी आंखों से देख लोगे।

परन्तु खुदा क्रोध करने (अज़ाब देने) में धीमा है। तौबा (पश्चात्ताप) करो कि तुम पर दया की जाए। जो खुदा को त्याग देता है वह मनुष्य नहीं, कीड़ा है, और जो उस से नहीं डरता वह मुर्दा है न कि ज़िन्दा।"

(हक़ीक़तुल-वही, रूहानी खज़ाइन जिल्द 22 पृष्ठ 269)

अल्लाह इस दुनिया के निर्णय कर्ताओं को सही निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करे और हम सभी अल्लाह की सुरक्षा में रहने वाले हों। हुज़ूर अनवर के शब्दों में, दुआ है कि अल्लाह तआला इन्सानियत को बचा ले और हमें दुआओं में भी अपना हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए आमीन....

(अखबार अल्फज़ल इंटरनेशनल 16 अप्रैल 2024 ई)

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

अरबईन नम्बर-4

संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमात, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी की कलम से

अनुवादक : फरहत अहमद आचार्य

इस्लाम के लिए एक अध्यात्मिक मुक़ाबले की आवश्यकता

हे दर्शको ! न्याय और ईमान की दृष्टि से विचार करो कि आजकल इस्लाम कैसी अवनति की अवस्था में है और जिस प्रकार एक बच्चा भेड़िए के मुख में एक ख़तरनाक स्थिति में होता है यही स्थिति इन दिनों इस्लाम की है और इस समय वह आपदाओं से गुज़र रहा है। (1) एक तो मुसलमानों के आन्तरिक मतभेद और आपस में एकता का अभाव चरमसीमा तक पहुँच गया है तथा एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाए पर दांत पीस रहा है।

(2) दूसरे बाह्य आक्रमण झूठे तर्कों के रूप में इतनी अधिकता के साथ हो रहे हैं कि जब से आदम पैदा हुआ या यों कहो कि जब से नुबुव्वत की नींव पड़ी है उन आक्रमणों का उदाहरण संसार में नहीं पाया जाता। इस्लाम वह धर्म था जिसमें एक व्यक्ति के मुर्तद हो जाने से मुसलमानों में शोर बरपा हो जाता था और यह असंभव समझा गया था कि कोई व्यक्ति इस्लाम की मधुरता का स्वाद लेकर फिर मुर्तद हो जाए। अब इसी देश ब्रिटिश इण्डिया (तत्कालीन इंडिया- अनुवादक) में हज़ारों मुर्तद पाओगे अपितु ऐसे भी जिन्होंने इस्लाम का अपमान तथा रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को गालियां देने में कोई कमी नहीं छोड़ी। फिर आजकल इसके अतिरिक्त यह मुसीबत खड़ी हो गई है कि जब सदी के ठीक सर पर ख़ुदा तआला ने इस्लाम के सुधार और पुनरुत्थान के लिए तथा आवश्यक सेवाओं के यथायोग्य एक बन्दा भेजा और उसका नाम मसीह मौऊद रखा। यह ख़ुदा ही का काम था जो ठीक आवश्यकता के दिनों में प्रकट हुआ तथा आकाश ने उस पर गवाही दी और बहुत से निशान प्रकट हुए परन्तु तब भी अधिकांश मुसलमानों ने उसको स्वीकार न किया बल्कि उसका नाम काफ़िर और दज्जाल, बेईमान, धोखेबाज़ रुपए-पैसे में ख़ुर्द-बुर्द करने वाला, झूठा वचन भंग करने वाला, धन खा जाने वाला, अत्याचारी, लोगों के अधिकारों को दबाने वाला, और अंग्रेज़ों की चाटुकारिता करन वाला रखा और उसके साथ जो चाहा व्यवहार किया और बहुत से लोगों ने यह बहाना प्रस्तुत किया कि इस व्यक्ति को जो इल्हाम होते हैं वे सब शैतानी हैं या अपने मनगढ़त हैं।

और यह भी कहा कि हम भी खुदा से इल्हाम पाते हैं और खुदा हमें बताता है कि यह व्यक्ति वास्तव में काफ़िर, दज्जाल, झूठा, बेईमान और नारकी है। अत: जिन लोगों को यह इल्हाम हुआ है वह चार से भी अधिक होंगे। अत: काफ़िर कहलाने वाले इल्हाम ये हैं और सत्यापन के लिए मेरे वे इल्हाम एवं सम्बोधन हैं जिनमें कुछ नमूने के तौर पर इस पत्रिका में लिखे गए हैं। इसके अतिरिक्त कुछ दिवंगत लोगों ने मेरे जवान होने से भी पूर्व मेरा और मेरे गांव का नाम लेकर मेरे बारे में भविष्यवाणी की है कि

वही मसीह मौऊद है और बहुत से लोगों ने वर्णन किया कि नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को हमने स्वप्न में देखा और आप[स.] ने फ़रमाया कि यह व्यक्ति सत्य पर है और हमारी ओर से है। जैसा कि पीर झण्डे वाला सिन्धी ने जिन के शिष्य लाखों से भी कुछ अधिक होंगे अपना यही कश्फ़ अपने मुरीदों (शिष्यों) में प्रचारित किया तथा अन्य सदात्मा लोगों ने भी दो सौ बार से भी अधिक कुछ आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को स्वप्न में देखा और कहा कि रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने स्पष्ट शब्दों में इस विनीत के मसीह मौऊद होने की पुष्टि की तथा हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ नामक एक व्यक्ति ने जो नहर विभाग के ज़िलेदार हैं मुझे सीधे तौर पर यह सूचना दी कि मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी ने स्वप्न में देखा कि क़ादियान पर एक प्रकाश आकाश से गिरा (अर्थात् इस विनीत पर) और कहा कि मेरी औलाद उस प्रकाश से वंचित रह गई। यह हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब का बयान है जिसे मैंने बिना किसी न्यूनाधिता के लिख दिया और झूठों पर ख़ुदा का अभिशाप। इस पर अतिरिक्त तर्क यह है कि यही बयान एक अन्य शैली और अन्य आयोजन के अवसर पर आदरणीय अब्दुल्लाह ग़ज़नवी ने हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब के सगे भाई मुहम्मद याक़ूब साहिब के पास किया और इस बयान में मेरा नाम लेकर कहा कि संसार के सुधार के लिए मुजद्दिद आने वाला था वह मेरे विचार में मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद है। यह शब्द एक स्वप्न की ताबीर में कहा और यह कि कदाचित[1*] इस प्रकाश से अभिप्राय जो आकाश से उतरते देखा गया मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद है। ये दोनों लोग जीवित मौजूद हैं और दूसरे सज्जन का हस्तलिखित लेख मेरे पास मौजूद है। अब बताओ कि एक सदस्य तो मुझे काफ़िर कहता है और दज्जाल नाम रखता है तथा अपने विरोधी इल्हाम सुनाता है जिनमें से मुन्शी इलाही बख़्श साहिब एकाउन्टेण्ट हैं जो मौलवी अब्दुल्लाह साहिब के शिष्य हैं तथा दूसरा सदस्य मुझे आकाश का प्रकाश समझता है तथा इस बारे में अपने कश्फ़ प्रकट करता है जैसा कि मुन्शी इलाही बख़्श साहिब का पीर मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी और पीर ज्ञानवान हैं। अब कितने अंधेर की बात है कि पीर ख़ुदा से इल्हाम पा कर मेरा सत्यापन करता है और मुरीद मुझे काफ़िर ठहराता है। क्या यह बहुत बड़ा उपद्रव नहीं है? क्या आवश्यक नहीं कि इस उपद्रव को किसी उपाय से बीच से समाप्त किया जाए? और वह उपाय यह है कि प्रथम हम उस बुज़ुर्ग को सम्बोधित करते हैं जिसने अपने बुज़ुर्ग पीर का विरोध किया है अर्थात् मुन्शी इलाही बख़्श साहिब एकाउण्टेन्ट को तथा उनके दो प्रकार से फैसले का मार्ग निर्धारित करते हैं। प्रथम यह कि एक सभा में इन दोनों गवाहों से मेरी उपस्थिति में या मेरे किसी वकील की उपस्थिति

1* स्मरण रहे कि मुन्शी मुहम्मद याक़ूब साहिब के हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब के सगे भाई ने अमृतसर में मुबाहले के आयोजन अब्दुल हक़ ग़ज़नवी, मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी का यह बयान लोगों को सुनाया था। वहाँ चार सौ के लगभग लोग रहे होंगे। उस समय उन्होंने शायद का शब्द प्रयोग नहीं किया था अपितु रो-रो कर उसी अवस्था में कि उनका मुंह आंसुओं से भीगा हुआ था निश्चित और ठोस शब्दों में वर्णन किया था कि मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ने मेरी पत्नी का स्वप्न सुनकर कहा था कि वह प्रकाश जो स्वप्न में देखा गया कि आकाश से उतरा और संसार को प्रकाशित कर दिया वह मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी है। इसी से।

में मौलवी अब्दुल्लाह साहिब की रिवायत को पूछ ले और उस्ताद के सम्मान का ध्यान रखकर उसकी गवाही को स्वीकार करें। तत्पश्चात् अपनी पुस्तक 'असा-ए-मूसा' को उसकी समस्त आलोचनाओं सहित किसी रद्दी में फेंक दें[2] ★, क्योंकि पीर का विरोधी भाग्यशाली लक्षणों के विपरीत है और अब वह पीर से अवज्ञा धारण करते हैं तथा माता या पिता द्वारा उद्दण्डता के कारण जिन बेटों को बहिष्कृत कर दिया हो उन बेटों के समान मुक़ाबले पर आते हैं तो वह तो मृत्यु पा चुके उनके स्थान पर मुझे सम्बोधित करें तथा किसी आकाशीय ढ़ंग से मेरे साथ फ़ैसला करें, परन्तु प्रथम शर्त यह है कि यदि पीर के मार्गदर्शन से उद्दण्ड हैं तो एक छपा हुआ विज्ञापन प्रसारित करें कि मैं अब्दुल्लाह साहिब के कश्फ़ और इल्हाम को कुछ वस्तु नहीं समझता और अपनी बातों को प्रमुखता देता हूँ। इस ढंग से फ़ैसला हो जाएगा। मैं इस फ़ैसले केलिए उपस्थित हूँ। सही उत्तर दो सप्ताह के मध्य आना चाहिए परन्तु छपा हुआ विज्ञापन हो।

वस्सलातो अला मनित्तबअलहुदा

विनीत- मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियान

---

[2] ★जबकि मुन्शी इलाही बख़्श साहिब को इल्हाम हो चुके हैं कि मौलवी अब्दुल्लाह साहिब का विरोध गुमराही है। अत: उन्हें चाहिए अपने उस इल्हाम से डरें तथा هبرِفاك لوّااونو كت ال को चरितार्थ न बनें और हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब के किसी पीठ पीछे इन्कार पर भरोसा न कर बैठें। हाफ़िज़ साहिब की एक सुदृढ़ कल हमारे हाथ में आ गई है। प्रथम हम उनको एक सभा में क़सम देंगे और फिर वह ठोस प्रमाण की वास्तविकता प्रकट करेंगे। फिर मुन्शी इलाही बख़्श साहिब अपनी पुस्तक 'असा-ए-मूसा' में मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी के ोबारे में लिखते हैं कि वह बड़े बुज़ुर्ग, सांसों में बरकत वाले तथा कश्फ़ और इल्हाम वाले थे उनकी संगत में प्रभाव थे हम उनके तुच्छ दास हैं। मैं कहता हूँ जबकि वह ऐसा बुज़ुर्ग थे और आप उनके तुच्छ मुरीद हैं तो आप क्यों ऐसे बुज़ुर्ग पर हाथ मारने लगे। आश्चर्य कि वह यह कहें कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी आकाशीय प्रकाश है और इस प्रकार वह मेरा सत्यापन करें और आप यह इल्हाम प्रस्तुत करें कि मूसा न तवां गश्त बतस्दीक़ ख़रे चन्द। अब आप ही बताएं कि जो व्यक्ति ऐसे-ऐसे पीर को गधा कहे वह कैसा है और उसका यह इल्हाम किस प्रकार का है? शर्म, शर्म, शर्म। इसी से

Asifbhai Mansoori
9998926311

Sabbirbhai
9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

अनुवादक: सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

प्रश्न : श्रीमान अमीर साहिब जर्मनी ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहुताला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में कौरोना वायरस की वजह से पैदा होने वाले हालात में नमाज़ बाजमाअत के लिए बाहम नमाज़ियों के दरमियान डेढ़ मीटर का फ़ासिला रखने के बारे में राहनुमाई चाही है? जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 28 अप्रैल 2020 ई. में इस बारे में निमंलिखित हिदायात से नवाज़ा। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरशाद إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ के तहत इस्लाम के हर हुक्म का आधार नीयत पर है। अत: नमाज़ बाजमाअत के लिए जो नमाज़ियों को आपस में कंधे से कंधा, घुटने से घटना और टख़ने से टख़ना मिला कर खड़े होने और बाहम दरमियान में फ़ासिला न छोड़ने की ताकीद फ़रमाई गई है, इसकी एक हिक्मत यह वर्णन की गई है कि अगर तुम ज़ाहिरन अपने अंदर दूरी पैदा कर लोगे तो शैतान तुम्हारे दरमियान अपनी जगह बना कर तुम्हारे दिलों में मतभेद पैदा कर देगा।

अब जबकि मजबूरी है और हुकूमतें अपने शहरियों की भलाई के लिए ऐसे इक़दामात कर रही हैं तो जब हम हुकूमती क़वानीन के मुताबिक़ इस तरह बाहम फ़ासले के साथ नमाज़ में खड़े होंगे तो चूँकि हमारी नीयत यह नहीं कि हमारे दरमियान फूट पड़े या हमारे दरमियान शैतान मतभेद डाल दे, बल्कि हमारी तो यही नीयत है कि हम मुत्तहिद रहें और मिलकर इस बीमारी का मुक़ाबला करें और अवाम की भलाई के लिए किए जाने वाले इन हुकूमती इक़दामात में उनके साथ तआवुन करें तो इस नीयत के साथ इज़तेरारी हालत में नमाज़ बाजमाअत में नमाज़ियों के दरमियान फ़ासिला रखने में कोई हर्ज नहीं। और इस का इसतंबात सफ़र में बहालत मजबूरी सवारी पर नमाज़ पढ़ने से भी किया जा सकता है, क्योंकि उस वक़्त भी कंधे से कंधा, घुटने से घटना और टख़ने से टख़ना नहीं मिला होता और बाज़-औक़ात नमाज़ियों के दरमियान बाहम फ़ासिला भी होता है। अत: जिस तरह सफ़र में मजबूरी की वजह से करना आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत से साबित है तो इस बीमारी की मजबूरी की हालत में भी नमाज़ियों के दरमियान फ़ासिला रखने में कोई हर्ज नहीं।

अल्लाह तआला रहम फ़रमाए और जल्द इन मुश्किल हालात को सारी दुनिया से दूर कर दे ताकि उसके इबादतगुज़ार बंदे फिर पूरी शरायत और अहसन अंदाज़ में अपनी इबादतों के नज़राने अपने रब के हुज़ूर पेश करने की तौफ़ीक़ पाए। आमीन।

सज्दे में अल्लाह तआला से दुआ करो कि अल्लाह तआला हमें अपना क़ुर्ब अता करे

अल्लाह से कहो जो दौलत मैं तुझ से मांग रहा हूँ वह तुम ही हो, मुझे पैसा नहीं चाहिए, मुझे दुनिया नहीं चाहिए, मुझे तेरा क़ुर्ब चाहिए।

अल्लाह से यह दुआ करो कि जिस वादे के साथ तुम जमाअत अहमदिया में आए हो अल्लाह तआला इस अह्द को पूरा करने की, निभाने की तौफ़ीक़ दे।

और तुम एक अच्छे मुरब्बी और मुबल्लिग़ बन के निकलो और अपने लोगों में तब्लीग़ करके इस क़ौम को अल्लाह तआला के सामने झुकाने वाले बनाओ।

प्रश्न : इस प्रश्न पर कि रोज़े के दौरान यदि किसी महिलाएं के माहवारी के दिन शुरू हो जाएं तो उसे रोज़ा खोल लेना चाहिए या उस रोज़ा को मुकम्मल कर लेना चाहिए। तथा जब ये दिन ख़त्म हों तो सेहरी के बाद पाक साफ़ हो सकते हैं या सेहरी से पहले पाक होना आवश्यक है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 30 अप्रैल 2020 मे इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर: महिलाएं की इस फ़ित्रती हालत को क़ुरआन-ए-करीम ने "أَذًى" अर्थात् कष्ट की हालत क़रार दिया है। और इस्लाम ने इस कैफ़ीयत में महिलाएं को प्रत्येक किस्म की इबादात के बजा लाने से रुख़स्त दी है। इसलिए जिस वक़्त माहवारी के दिन शुरू हो जाएं उसी वक़्त रोज़ा ख़त्म हो जाता है और उन दिनों के पूरी तरह ख़त्म होने पर और मुकम्मल तौर पर पाक होने के बाद ही रोज़े रखे जा सकते हैं। तथा जो रोज़े इन दिनों में (आरंभ और अंत वाले दिन के साथ छूट जाएं,) इन रोज़ों को रमज़ान के बाद किसी वक़्त भी पूरा किया जा सकता है।

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के नाम अपने पत्र में हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी एक हदीस कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारे एक ख़ज़ाना की ख़ातिर तीन व्यक्ति क़िताल करेंगे (और मारे जाऐंगे) तीनों ख़लीफों (हुकमरान) के बेटे होंगे लेकिन वह ख़ज़ाना उनमें से किसी को भी नहीं मिलेगा। फिर पूर्व की जानिब से स्याह झंडे नमूदार होंगे वे तुम्हें ऐसा क़तल करेंगे कि इस से क़बल किसी ने ऐसा क़तल न किया होगा। इस के बाद अपने कुछ और बातें भी वर्णन फ़रमाएं जो मुझे याद नहीं, फिर फ़रमाया जब तुम इन (महदी) को देखो तो उनकी बैअत करो जबकि तुम्हें बर्फ़ पर घुटनों के बल घिसट कर जाना पड़े। क्योंकि वह ख़लीफ़तुल महदी हैं।" दर्ज करके इस के एक हिस्सा की व्याख्या कर के बारे में हुज़ूर की राय दरयाफ़त की। तथा हदीस के एक हिस्सा के बारे में मज़ीद वज़ाहत चाही। हुज़ूर अनवरअय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब दिनांक 30 मई 2020 मे इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : आप ने इस हदीस का हवाला बहर-ए-ज़रख़ार से दर्ज किया है जबकि यह हदीस सहा सित्ता में से सुंन इब्ने माजा किताब फ़ितन बाब ख़ुरूज महदी में भी रिवायत हुई है। हदीस में वर्णन कंज़ और ख़लीफों के बेटों के बारे में आपकी वर्णन करदा व्याख्या एक ज़ौक़ी व्याख्या है।

मेरे ख़्याल में इस में आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उम्मत-ए-मुस्लिमा में आगे ज़माने में नमूदार होने वाले विभिन्न वाक़ियात की ख़बर दी है। जिनमें कुछ वाक़ियात दुनियावी उमूर से सम्बन्ध

रखते हैं और कुछ अध्यात्मिक उमूर के सम्बन्ध में हैं। खज़ाने से मुराद बहुत से उल्मा ने ख़ाना काबा का ख़ज़ाना मुराद लिया है, परन्तु वह ख़ज़ाना तो बहुत से हुकमरानों के हाथ लगे भी हैं। इसलिए हदीस में मज़कूर ख़ज़ाना से मुराद ख़ाना काबा का ख़ज़ाना मुराद नहीं हो सकता क्योंकि हदीस मे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़र्मा रहे हैं कि वह ख़ज़ाना उनमें से किसी को नहीं मिलेगा। इस लिए इस से मुराद वह अध्यात्मिक ख़ज़ाना है जिस की आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने बाद ख़िलाफ़त अला मिनहाज अल् नबूव्वत के इजरा की सूर: में बशारत अता फ़रमाई थी। और चूँकि इस खज़ाने को पाने के लिए क़ुरआन-ए-करीम ने सबसे प्रथम शर्त ईमान और अमल-ए-सालेह क़रार दी है, जो इन दुनियावी हुकमरानों में मफ़क़ूद हो चुकी थी, इसलिए उन्होंने इसके हुसूल के लिए क़िताल अर्थात् जंगें तो बहुत कीं लेकिन किसी के हाथ वह अध्यात्मिक ख़ज़ाना न आया।

इसी लिए इस में आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खज़ाने के लिए क़िताल करने वालों के लिए केवल "इब्ने ख़लीफ़" के शब्द प्रयोग फ़रमाए हैं। अर्थात् वह ख़लीफ़ा जांनशीन के अर्थों में होंगे लेकिन अल्लाह तआला की तरफ़ से क़ायम किए हुए ख़लीफ़ा या नुबुव्वत की आधार पर मिलने वाली ख़िलाफ़त के ताबे ख़लीफ़ा नहीं होंगे। जबकि इसी हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस व्यक्ति के लिए जिसे यह ख़िलाफ़त अला मिनहाज-ए-नबूव्वत का अध्यात्मिक ख़ज़ाना मिलना था "ख़लीफ़तुल महदी" के शब्दों प्रयोग फ़रमाए हैं।

इस हदीस में मुसलमानों के क़तल-ओ-ग़ारत का जो वर्णन है, आप ने उस के बारे में अपना ख़्याल ज़ाहिर किया है कि वह महदी के माध्यम से होगा जो मेरे नज़दीक दरुस्त नहीं है। यदि इस से मुराद ज़ाहिरी क़तल ओ ग़ारत और रक्तपात ली जाए तो यह महदी के माध्यम से कदापि नहीं हो सकती बल्कि इस से मुराद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक दूसरी हदीस (वर्णित मिशकात मसाबीह" में مُلْكًا عَاضًّا और مُلْكًا جَبْرِيَّةً के शब्दों में वर्णन भविष्यवाणी के अनुसार, इन प्रत्येक दो अदवार में मुसलमानों की आपस की जंगों में होने वाली ख़ूँरेज़ी और हत्या और खून खराबा है। तथा तेरहवीं सदी में मंगोलों के हाथों होने वाली मुसलमानों की क़तल-ओ-ग़ारत मुराद है।

ख़लीफ़तुल्लाह अल् महदी के माध्यम से इस क़तल-ओ-ग़ारत के घटित न होने की एक दलील यह भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आने वाले महदी की एक निशानी "يَضَعُ الْحَرْب" अर्थात् वो जंग-ओ-जिदाल और ख़ून खराबे का ख़ातमा कर देगा। (सही बुख़ारी किताब अंबिया बाब नुज़ूल ईसा) वर्णन फ़रमाई है। अत: यह कैसे हो सकता है कि एक तरफ़ तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आने वाले महदी को अमन-ओ-शांति का अलमबरदार क़रार दे रहे हों और दूसरी तरफ़ इसी के माध्यम से उम्मत-ए-मुहम्मदिया के लोगों की ऐसी ख़ूँरेज़ी की सूचना दे रहे हों जैसी ख़ूँरेज़ी पहले ज़मानों में कभी किसी ने न की हो?

फिर उस हदीस में रावी का यह वर्णन कि "इस के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ और बातें भी फरमाईं जो मुझे याद नहीं।" विशेष तवज्जा देने योग्य है। और बहुत संभव है कि वे उमूर दज्जाल

के ज़हूर के बारे में हों क्योंकि असंख्य ऐसी रिवायात कुतुब अहादीस में मौजूद हैं जिनमें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दज्जाल के फ़ित्ना को सबसे बड़ा फ़ित्ना क़रार दिया और उसके मुक़ाबले के लिए अपनी उम्मत को मसीह मौऊद की आमद की ख़ुशख़बरी अता फ़रमाई। रावी के अनुसार इन बातों के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की आमद का वर्णन फ़रमाया और उनकी बैअत को लाज़िमी क़रार देते हुए ताकीदन फ़रमाया कि यदि तुम्हें बर्फ़ की सिलों से घुटनों के बल घिसट कर भी जाना पड़े तो अवश्य उसकी बैअत करना, क्योंकि वह ख़लीफ़तुल्लाह अल् महदी है।

अत: हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस हदीस में तीन अलग अलग ज़मानों का वर्णन फ़रमाया है। एक वह ज़माना जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और ख़िलाफ़त-ए-राशिदा का मुबारक दौर खुदा की मर्ज़ी से समाप्त हो जाएगा। और इसके बाद मुसलमान आपस में जंग-ओ-जदाल करेंगे और अपने ही लोगों को तलवार के नीचे करके उनका ख़ून बहाएँगे, उस वक़्त वह अध्यात्मिक खज़ाने से वंचित हो जाऐंगे। दूसरा वह ज़माना जब मुसलमानों के दुनियावी लिहाज़ से भी कमज़ोर हो जाने की वजह से उनके ग़ैर मुस्लिम मुख़ालेफ़ीन उन्हें ख़ूँरेज़ी का निशाना बनाएंगे और फिर तीसरा वह जब आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बशारतों के अनुसार इमाम महदी और मसीह मुहम्मदी की बिअसत (आगमन) होगी और उम्मत-ए-मुहम्मदिया का वह हिस्सा जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस ग़ुलाम सादिक़ और अध्यात्मिक फ़र्ज़ंद की बैअत करके उसकी आग़ोश में आ जाएगा, उस के लिए एक मर्तबा फिर उसी तरो ताज़गी का ज़माना आएगा जिसका मुशाहिदा उम्मत मुहम्मदिया ने अपने आक़ा-ओ-मुता हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अह्द मुबारक में किया था और उस वक़्त फिर "सहाबा से मिला जब मुझ को पाया" की खुशखबरी इन ख़ुश-नसीबों के लिए पूरी होगी।

हदीस में दर्ज क़तल-ओ-ग़ारत को यदि रूपक के लिया जाए तो फिर उसके अर्थ ये होंगे कि जिस तरह सही बुख़ारी में "يَضَعَ الْحَرْب" वाली हदीस में मज़कूरा "فَيَكْسِرَ الصَّلِيبَ وَيَقْتُلَ الْخِنْزِيرَ" का हक़ीक़ी अर्थ सलीब तोड़ना और सिर मारना नहीं। बल्कि इस से मुराद ईसाइयत की तरफ़ से इस्लाम पर होने वाले आरोप का मुंहतोड़ उत्तर देना मुराद है, इसी तरह इमाम महदी के माध्यम से मुसलमानों के क़तल से मुराद उन में राह पा जाने वाले ग़लत अक़ायद का क़िला क़मा करना और दीन की तजदीद कर उसे आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीमात के ऐन अनुसार दुनिया में रायज करना होगा।

अत: मेरे ख़्याल में यदि इस हदीस को इस तरह लिया जाए तो ज़्यादा बेहतर व्याख्या बनती है और क़तल की भी वज़ाहत हो जाती है। शेष.....

(अखबार बदर के सौजन्य से)

★ ★ ★

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

Prop : Sk. Ishaque

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FFT Fruits

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO
DL
LEATHERS

Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إن ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ۚ إنه كان بعباده خبيرا بصيرا ○

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

वुज़ू और नमाज़

नमाज़ का पढ़ना और वुज़ू का करना अपने साथ चिकित्सा संबंधी लाभ भी रखता है। चिकित्सक कहते हैं कि यदि कोई प्रतिदिन मुंह न धोए तो आंख आ जाती है (आंख दु:खने लगती है- एडिटर) और यह मोतियाबिंद का आरंभिक आधार है। इससे और भी बहुत सी बीमारियां पैदा हो जाती हैं। फिर बतलाओ कि लोगों को वुज़ू करते हुए क्यों मौत आती है। कितनी अच्छी बात है मुंह में पानी डालकर कुल्ली करना होता है, दातुन करने से मुंह की बदबू दूर होती है। दांत मज़बूत हो जाते हैं और दांतो की मज़बूती भोजन को अच्छी तरह चबाने और शीघ्र हज़्म हो जाने का कारण होती है। फिर नाक साफ़ करना होता है। अगर नाक में कोई बदबू जाए तो दिमाग़ को दूषित कर देती है। अब बतलाओ कि वुज़ू करने में क्या बुराई है? इसके बाद वह अल्लाह के समक्ष अपनी चाहतें लेकर जाता है और उसको अपनी चाहतों के प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है, दुआ करने के लिए फ़ुर्सत मिलती है। ज़्यादा से ज़्यादा नमाज़ में एक घंटा लग जाता है। यद्यपि कई नमाज़ें तो 15 मिनट से भी कम समय में अदा हो जाती हैं। फिर बड़े आश्चर्य की बात है कि नमाज़ के वक़्त को समय का नष्ट करना समझा जाता है, जिसमें इतनी भलाइयां है और फ़ायदे हैं। यदि सारा दिन और सारी रात नीच और व्यर्थ बातों या खेल तमाशो में नष्ट कर दें तो उसका नाम व्यस्तता रखा जाता है। यदि मज़बूत ईमान होता, मज़बूत तो एक तरफ़, यदि ईमान ही होता तो यह हालत क्यों होती। और यहां तक नौबत क्यों पहुंचती।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द- 2)